THE FREE INDOLOGICAL COLLECTION

WWW.SANSKRITDOCUMENTS.ORG/TFIC

FAIR USE DECLARATION

This book is sourced from another online repository and provided to you at this site under the TFIC collection. It is provided under commonly held Fair Use guidelines for individual educational or research use. We believe that the book is in the public domain and public dissemination was the intent of the original repository. We applaud and support their work wholeheartedly and only provide this version of this book at this site to make it available to even more readers. We believe that cataloging plays a big part in finding valuable books and try to facilitate that, through our TFIC group efforts. In some cases, the original sources are no longer online or are very hard to access, or marked up in or provided in Indian languages, rather than the more widely used English language. TFIC tries to address these needs too. Our intent is to aid all these repositories and digitization projects and is in no way to undercut them. For more information about our mission and our fair use guidelines, please visit our website.

Note that we provide this book and others because, to the best of our knowledge, they are in the public domain, in our jurisdiction. However, before downloading and using it, you must verify that it is legal for you, in your jurisdiction, to access and use this copy of the book. Please do not download this book in error. We may not be held responsible for any copyright or other legal violations. Placing this notice in the front of every book, serves to both alert you, and to relieve us of any responsibility.

If you are the intellectual property owner of this or any other book in our collection, please email us, if you have any objections to how we present or provide this book here, or to our providing this book at all. We shall work with you immediately.

-The TFIC Team.

जैनभजन प्रकाश

चतुर्थ भाग।

यह कीताब तेरापंथी आमनाय के
श्रावक जोरावरमल बयद मु०
रतनगढ़ वालेनै बनाया वा
संग्रह करके छपाया वा
प्रकाशित किया।

मिलने का ठिकाना
(जोरावरमल बयद)
नं० १४ मुंगापट्टी बड़ाबजार कलकत्ता
भैरूंदान जोरावरमल बयद
मु० रतनगढ़

६२ काटन ष्ट्रीट छापा प्रेस में आर० बी०
टिवडेवाला द्वारा मुद्रित हुआ।
सम्वत १९६७ मीती वैसाख कृष्ण
सर्वाधिकार रक्षित।

विज्ञापन।

इस किताबकि छपानेमें वा संसोधन करनेमें कोई तरहका हरफ लगमात वा भूल हुवा होय तो मुजे मिछामीं दुकड होय वा सज्जन पुर्ष सुद्ध मात्रा कारके भणा-नेमें ल्यावे भूल चूक दुसरी आवृत्तीमें सुद्ध की जायगी पाठक भूल चूक पर तरक न करै।

इस किताबमें सहायता देनेवाले महा-सयोंकि नाम। बाबू

तेजपालजी वधीचन्दजी सुराणा मु० चूरू।
रुकमांनन्दजी उदैचन्दजी सुराणा मु० चूरू।
भीकमचन्दजी चोरड़िया मु० सरदार सहर
बुद्धमलजी पींचा मु० सरदार सहर।
भीकमचन्दजी छाजेड मु० सरदारसहर

जोरावरमल बयद सु० रतनगढ़

THE INDIAN ART SCHOOL, CALCUTTA

॥ श्री ॥

॥ श्रीजिनेश्वरदेवाय नमः ॥

अथश्री चौवीस जिन स्तवन ॥ राग० कैसें जीउ मेरी ज्यान सजन विन कैसें जीउरें ॥ एदेशी० ॥ कुंण तारे भवपारजी जिनंद विन कुंण तारे भवपार ॥ एआं० ॥ ऋषभ अजित संभव भजोरे ॥ अभिनंदन सुविलास ॥ सुमति पदम सुपास जीरे ॥ चंद रंध्यां शिववास ॥ जिनन्द ॥ १ ॥ सुवुद्धि शीतल श्रीयांशजीरे ॥ वास पुज्य भगवंत ॥ विमल अनन्त धर्म सांत जीरे ॥ प्रणमत भवको अन्त ॥ जिनन्द० ॥ २ ॥ कुंथु अरी मल्ली तणोरे ॥ समर्यां है सुखकार ॥ मुनिसो व्रत जिनराज कैरे ॥ चरणांको आधार ॥ जिनन्द० ॥ ३ ॥ नमीनाथ एकवीस

मांरे ॥ प्रभु मोटा जगदेव ॥ दुःख दोहग दूरे टलैरे ॥ ज्यो सारे तुमसेव ॥ जिनन्द० ॥ ४ ॥ नेमीनाथ बावीसमांरे ॥ चतुज बली अरिहंत ॥ राजुलदेको छाड़ केरे ॥ शिव वधुवेग वरन्त ॥ जिनन्द० ॥ ५ ॥ पार्श्वनाथ इन्द्र मांज जोरे ॥ सर्व जिनन्द चौवीस ॥ भजन करो भवि जीवडा रे ॥ तो शिव विसवा बीस ॥ जिनन्द० ॥ ६ ॥ सम्बत उगणीसै छासठैरे ॥ वैसाख सुदी बुधवार ॥ जोरावर एकम तिथिरे ॥ प्रणमत वारंवार जिनन्द० ॥ ७ ॥ इति० ।

अथवीस बहरमान स्तवन ॥ राग० ॥ कंथ तमाखु छोड़ दे ॥ मुखड़ा मैं आवै वासजी ॥ आलीजा तमाखु छोड़ दे ॥ एदेशी० प्रात उठी भजिये भवि ॥ प्रभु बहरमान जिन बीसजी ॥ प्रा० एआं० ॥ श्री सीमंद्र साहिवा । दुजा युगमन्द्र देवजी ॥

भाग्य बली नर जेहछे। ते सारे नित प्रत सेवजो ॥ प्रा० ॥ १ ॥ बाहु सुबाहु गुण नीला। सुजात जगतवी ईसजो ॥ स्वयं प्रभु मोटा महि। जिण जीत्या रागनैरी सजो ॥ प्रा० ॥२॥ ऋषभानन्द आनन्दकर। अनन्त वीर्य गुणखानजी ॥ सूर प्रभु सेव्यां-थकां। कोइ पामे पद निरवाणजी ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ वीशाल प्रभु वैरागीया। बजरधर बज्र समानजो ॥ घातो कर्मांनै खयकरी। प्रभु पाम्यां केवल ज्ञानजी ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ चंद्रा नन्दजी बारमां। चन्द्र बाहु रह्यां सुखकार जी ॥ सुजंग प्रभु भय मेटिया। जिण बरी शिव सुन्दर नारजी ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ ईश्वरजी जगईश्वरू। श्रीनेमीश्वर जिनराय जी ॥ वीरसेन महाभद्रजी। ज्यांरा लुल २ पूजो पायजी ॥ प्रा० ॥ ६ ॥ देव जश दीवाकरू उद्योत करण संसारजी ॥ अजित वीर्य जिन

बीसमां । ज्यांने वांदुं बार हजारजी ॥ प्रा०
॥७॥ एह बीस वहरमान साश्वता । जघन पदे अवधारजी ॥ उत्कृष्टा शत साठही । बीचरै महा विदेह मंझारजी ॥ प्रा० ॥ ८ ॥
प्रभु चौतीस अतिशय दीपता ॥ कोईवांणी गुण पैंतीसजी ॥ फिटक सिंहासन बैसणो । आप जीवांना जगदीसजी ॥ प्रा० ॥ ९ ॥
प्रभुलक्ष चौरासी पुरवां आयु परमाण विचारजी ॥ सहुनो आयु एकसो । नहीं कोइ फेर लिगारजी ॥ प्रा० ॥ १० ॥ प्रभु महा विदेहमें वस रह्या । हुं वसुं भर्थ खेत मंझारजी ॥ आवन सक्त म्हारी नहीं । थांरो नाम जपुं जयकारजी ॥ प्रा० ११ ॥ जोरावरकी बीनती । थे मांनो प्राण धारजी ॥ सुजमन भाव जाणी रह्या ॥ प्रभु ज्ञानतणे अनुसारजी ॥ प्रा० १२ ॥ उगणीसैं पैंसठ समैं । कांई पोष शुक्ल पक्षसारजी ॥ नवमी

तिथ गुरुवारने गुण गावत हर्ष अपारजी ॥
॥ मा० ॥ १३ ॥ इति० ।

अथ ऋषभ जिन स्तवन ॥ राग० ॥ साहेब कैसें करुं तोय राजी ॥ एहहरजसकी चालमें ॥ देशी० ॥

१ ऋषभ जिन कैसें करुं तोयराजी ॥ पांचु चोर करे कुफराना मोह बड़ो है पाजी ॥ ऋष० एआं० नाभिके नन्दन जगतके वंदन तुमकों कैसें पाउं ॥ कर्मों के संग फिरुं भटकतो भव भव गोता खाउं ॥ ऋष०॥१॥ में चेतन अनाथ प्रभुजी ॥ कर्म कुबुद्धि अति भारी ॥ तिणमें फिर कुगुरां भरमायो ॥ भूल गयो सुधसारी ॥ ऋष० ॥ २ ॥ अब कछु पुन्य अंकूर प्रगट भयो ॥ साचा सत्त गुरुपाया मुज ऊपर कृपा हदकीनी ॥ तोरा स्वरूप बतलाया ॥ ऋष० ॥ ३ ॥ एह संसार असार जिनुंमें ॥ तुज समर्ण सुखकारी ॥ एही धार तुज

रटना लगाई ॥ निसदिन सांझ सवारी ॥ ऋष० ॥ ४ ॥ जोरावर भज आद जिनन्द पद ॥ तन मन अति हुलसाई ॥ भजन करे बिन पार न पावे ॥ या सन्त गुरु फरमाइ ॥ ऋष० ॥ ५ ॥

अथ श्री वर्द्धमान जिन स्तवन ॥ राग० सोहनी ॥ एरी जसोदा तोसें लरंगी लराई ॥ एदेशी० ॥

एरी जिनन्दा तोसे अर्ज हमारी । तुज सरणां करूं उठ सवारी । एरी० एयां० राय सिद्धार्थघर अवतारी ॥ टसला देजी तुज महेतारी ॥ एरी० ॥ १ ॥ जन्म महोत्सव सुरपति आरी ॥ मंगल गावत दीसाजी कूंवारी ॥ एरी० ॥ २ ॥ बहुविध वृद्धि थई तिणवारी । इन्द्र मांन तव नाम दियारी ॥ एरी० ॥ ३ ॥ कर अंगुष्ट करिमेर कंप्यारी ॥ महावीर जब नाम भयारी ॥ एरी० ॥ ४ ॥ जग सुख जहरसमा पुरुषारी ॥ वैरागधर संयम व्रतधारी ॥ एरी०

॥ ५ ॥ बहु बिध तपकर कर्म खपारी ॥ध्यान धरी केवल उपजारी ॥ एरी० ॥ ६ ॥ दिस विदिसांमें कियो बहु उपगारी ॥ गोतमादिक एकादश गणधारी ॥ एरी० ॥ ७ ॥ चउदे संहस मुनिश्वर तारी ॥ आर्यातागी छतीस हजारी ॥ एरी० ॥ ८ ॥ कामदेव आद श्रावक विचारी ॥ एक लच्छ गुण सठ संहस उद्धारी ॥ एरी० ॥ ९ ॥ तिरलच्छ सहंस अष्टा दश सारी ॥ रेवती आद श्राविका तारी ॥ एरी० ॥ १० ॥ लाखांको डां सुलभबोधि कीयारी । श्रेणकादिक दृढ़ समकित धारी ॥ एरी० ॥ ११ ॥ कोणक भक्त भयो तुज भारी ॥ तेह नो आप कियो निस्तारी ॥ एरी० ॥१२ ॥ तुमताखा ज्यांरो पारन पारी । पिण अब आई हम तणी चारी ॥ एरी० १३ ॥ प्रगट कारण तुम समर्थ धारी ॥यह ऋद्धि करूं भेट तुमारी ॥एरी०१४

युग सावन वद एकम सारी ॥ जीरायर प्रभुके गुणगारी ॥ एरी० ॥ १५ ॥ इति० ॥

अथश्री भिक्षणजी स्वामीके गुणांको सत्वन ॥ प्रभु जाय चढ़े गिरनारीरे। वोनै छाड़ि है राजुल नारी। सुणी पशु पुकारी दया चित धारी। वारी ममताकों मारी बीसारी ॥ एदेशी० ॥ प्रभु भिक्षु भये अवतारीरे। इण पंचम आरे मंझारी ॥ बहु जीव उद्धारी किया भवपारी। ज्यांरो सरण सदा सुखकारी ॥ एआं० गणि सुत्र सिद्धांत के भेद भिनो भिन ॥ खोल किया निस्तारी ॥ अन्य मत्तकों छोड दीना। प्रभु सुद्ध थया अणगारी ॥ प्रभु सुद्ध थया अणगारीरे ॥ इण० ॥ १ ॥ गणि देश विदेश विचर भवितारया। सुलभ किया नरनारी ॥ जड मुढने सीधाकीना। ज्यांरी भिंतर खोड निवारी ॥ ज्यांरी०

दूण० ॥ २ ॥ पाखंड भेख बध्या बहुतेरा ।
ज्यांनै चरंचासुं जीत विडारी ॥ सुद्ध मार्ग
प्रगट कीना । प्रभु वीरवचन उरधारी ॥
प्रभु० दूण० ॥३॥ दोय अनुकंपके भेद बताया ।
दया दानको कियो विचारी ॥ सावज्ज निर-
वद्य का छाण कीना । कियो ज्ञान भान
उजियारी ॥ कियो० दूण० ॥ ४ ॥ चरम-
जिनंदनो सांसन दिपायो । गणि किया
घणा उपगारी ॥ बहु प्रबंधबांध दीना ।
प्रभु च्यार तीर्थ हितकारी ॥ प्र० दूण० ॥
५ ॥ जोरावर गुण गाय यथार्थ । प्रण
मतवार हजारी । तुज चरण सरणामें
लीना । थयो आनंद हर्ष अपारी ॥ थयो०
दूण० ॥ ६ ॥ सम्वत उगणीसै पैंसठ बरसै
पोष शुक्ल पञ्चसारी ॥ गुण गाय खुसीभया
सीना । जाउं बार बार बलिहारी ॥
जाउं० दूण० ॥ ७ ॥ इति०

अथ श्री डालचंदजी महाराजकी गुणांकी ढाल१ पहली० राग ॥ मल्हार० तथा पीलु तथा ठुमरी तीन चाल मैं० ॥

डाल गणि मैंतो दर्श तिहारो ॥ पेखत प्रगट्यो हर्ष अपारो ॥ डाल० एथां० निस दिन लाग रह्यो मुज मनमें ॥ कब देखूं प्रभुके दीदारो ॥ डाल० ॥ १ ॥ अन्तराय कर्म कछु दूर भये जब ॥ आन मिल्यो अवसर दर्शणांरो ॥ डाल० ॥ २ ॥ धन्य घड़ी धन्य भाग्य हमारो ॥ भेट्योमैं नन्द कन्हीयाको प्यारो ॥ डाल० ॥ ३ ॥ चरण कमल फरसित हियो हर्षित ॥ तन मन विकस रह्यो अति म्हांरो ॥ डाल० ॥ ४ ॥ मैं पापी तुम तारन हारो ॥ भवसायर थी पार उतारो ॥ डाल० ॥ ५ ॥ तुम हो दीनानाथ जगतके ॥ असरणाकों सरणागत थांरो ॥ डाल० ॥ ६ ॥ तुम सम तारक नांही जगतमें ॥

मुजकर चढ़ीयो रत्न हजारो॥ डाल० ॥७॥ जोरावर भज डालचन्द पद॥ लुल २ ध्यावत सांझ संवारो ॥ डाल० ॥ ८ ॥ उग-णी सैं छासठ शुभ सम्वत ॥ अक्षय तृतीया दिन आनन्द अपारो ॥ डाल०॥ ९ इति० ॥

अथ ढाल२ दूसरी० राग थीयेटर की०

पल पल तन मन धनवारो ॥ एचाल्में० ॥ पल २ नित समरन थारो २ ॥ प्रान प्यारो डाल तिहारो॥ दर्शनवाके परसन वासें मनवा मगन भयो॥ तन मन विकसित सारो॥ पल० एआं० भिक्षु गणिंदको पाट सातमों डाल दीपा वनहारो॥ मात जड़ाव कनइयाको नन्दन॥ लागत मुजकुं प्यारो। पल० ॥१॥ च्यार तीर्थ नित करता दर्शन॥ पेखत तुम दीदारो॥ अमृत वैन सुणी भविजन बहु सफल गिणै अवतारो॥ पल० ॥ २ ॥ पारसकी संगत करवे सुं लोह

कंचन हुवै सारो ॥ तुम संगत शिव सुख कुं पावै ॥ दुःखसें हो छुटकारो । पल०॥३॥ पोत प्रसंगे सागर मांही ॥ पहुंचै पइले पारो ॥ भव सागर बिच जहाज समां तुम। पार उतारन हारो । पल० ॥४॥ कल्पवृक्ष सम आशा पूरण । चिंत्या चुर्ण मंदारो । तुज गुण ज्यो तन मन सुं गावे । कर देवो खेवो पारो। पल० ॥ ५ ॥ अभय दान जीवों कों आपो। तुम सम कौन दातारो ॥ जोरावर पर मेहर करिनें। द्यो शिवपद सुखकारो । पल० ॥ ६ ॥ पैंसठ पौष शुक्ल तिथि द्वितीया। कलकत्ता सहर मंझारी। श्रीगुरुदेव तणां गुणगाया । प्रगट्यो आनन्द अपारो । पल० ॥ ७ ॥ इति० ।

अथ ढाल३ तीसरी राग० जवाडूकै भांगकै गीतकी बचनारो बांध्यो ढोलोकह्योय न माने ॥ एदेशी० बांन्दोरे सुन्यानी जीवड़ा

डाल गणि वान्दो ॥ वन्दत प्रम आनंद लो ॥ भेटत शिव सुख कंद लो ॥ सुख जिम पूनमचंद लो ॥ श्रैसोरे उपगारी स्वामी डाल गणि वान्दो ॥ भविजनको प्यारो जुनि-वर डाल गणि वांदो ॥ एश्रां ॥ चाद जिनंद ज्युं भिक्षु अधिक उजागर ॥ पंचम आरे मंझार लो ॥ धर्म प्रगट कियो बहु भवि-तारया ॥ जिन सांसण उजियार रो ॥वांदो॥ ॥ १ ॥ तसपट सप्तमें डाल मुनिंदा ॥ च्यार तीर्थं आधारलो । दर्श पियारो ज्यांरो जे कोइ पावे ॥ पुन्य प्रबल तसुश्रार लो ॥ वांदो ॥ ॥ २ ॥ समो सरण विच जिनवर सोहै ॥ भविमन मोहै अपार लो ॥ जिम इण आरे आप जिनवर जेहवा ॥ ज्ञानसीरोमण सार लो ॥ वांदो ॥ ३ ॥ सभा सुधर्मी इन्द्र दिपावे ॥ जिम जिन सांसण सांयलो ॥ भिक्षु गणिंदरो तखत दिपावो ॥ थांरो दिन

दिन तेज सवाय लो ॥ बांदो० ॥ ४ ॥ सुर नर मुनि थांरो दर्शन चावै ॥ ध्यान धरे सुभ कारलो । दीनदयाल गोवाल कृपानिधि भविजिव तारण हारलो ॥ बांदो ॥ ५ ॥ प्रात उठीने थांरो समर्ण करसी ॥ तेलइसे भवपार लो ॥ दुःख संकट ज्यांरै कदेयन थासी ॥ आवा गमन निवार लो ॥बांदो०॥ ॥६॥ सम्बत उगणीसे छासठ वर्षे ॥ श्रावण धुरपच्छ सारलो ॥ पंचमी तिथ जोरावर थां सुं बिनवै बार हजार लो ॥बांदो०।७।इति०

अथ ढाल ४ चौथो ॥ राग० हरजस को०

राम नाम रस पीजे पीजे पीजेरे पीजे रस पीजे ॥ एचालमें० डाल नाम रट लीजे लीजे लीजेरे लीजे रस पीजे ॥ थांरो बंछित कार्य सीझे २ सीझेरे सीझे रस पीजे ।एआ० निंदा विकथा आलस तजके ॥ नरभव लाहो लीजे २ लीजेरे लीजे रस पीजे ॥

डाल० ॥१॥ कुगुरु कुदेव कुधर्म कुमारग ॥ प्रवल हीन नही दीजे २ दीजेरे दीजे रस पीजे ॥ डाल० ॥ २ ॥ डाल गुरुकी संगत करके ॥ प्रभु चरचा नित कीजे २ कीजेरे कीजे रस पीजे ॥ डाल० ॥ ३ ॥ ऐसा गुरु पडि लाभ हाथसें ॥ सकल मनोरथ सीजे२ सीजेरे सीजे रस पीजे ॥ डाल० ॥ ४ ॥ ऐसा गुरुकी देसन सुणके । ज्ञान सुद्धा रस्त पीजे २ पीजेरे पीजे रस पीजे ॥ डाल० ॥ ॥५॥ एह संसार असार जाणकर ॥ सुकृत करणी कीजें २ कीजेरे कीजे रस पीजे ॥ डाल० ॥ ६ ॥ जोरावर सुगुरु सेव्यां थी ॥ प्रम प्रमातम रीजे २ रीजेरे रीजे रस पीजे ॥ डाल ॥ ७ ॥ इति० ।

अथ ढाल ५ पांचमी० राग० कजरीकी० भोला छाय रहे काशीमें गिरज्यां पारवती की संग ॥ एदेशी० ॥ तुम ध्यावोरे सुज्ञानी ॥

नित उठ नंद नंदके नंद। नंद नंद आनंद कंद घर ॥ जन्म लियो सुखकंद ॥ तुम० ॥एआं०॥ सहर उज्जेणी देश मालवो। ओश वंस छाजंद ॥ तुम० ॥१॥ पोपाडांकि कुलमें गणिवर ॥ पायो नाम जवरंद ॥ तुम० ॥ २ ॥ अनुक्रमें थया वर्ष चतुर्दश। छोड़ दिया गृह फंद ॥ तुम० ॥ ३ ॥ बहु सुत्र सिद्धान्त सीख गणि ॥ देश २ बिचरंद ॥ तुम० ॥ ४ ॥ चोपन माघ बदी द्वितिया दिन। गणिपद हद पावंद ॥ तुम० ॥ ५ ॥ सर्व संतोंमें सोभ रह्या है। जिम उडुगणमें चंद ॥ तुम ॥६॥ धीर वीर बाणीं ज्युं कीर ॥ गणि गहरा जेम समंद ॥ तुम० ॥ ७ ॥ हुवा कलु कालमें जिनवर जेहवा। तप रह्यो तेज दिनन्द ॥ तुम० ॥ ८ ॥ मुलक २ में डंको वाज रह्यो। पाखण्ड पड गयामंद ॥ तुम० ॥ ९ ॥ दूर दूरसे आवे जातरी। दर्शनको जन वृन्द।

॥ तुम० ॥ १० ॥ तुज बदन कमल दीदार पेख ॥ भवि रोमराय हुलसंद ॥ तुम० ११ ॥ जोरावर तोरा गुण गावै । हुलस २ पय-बंद ॥ तुम० ॥ १२ ॥ द्वितीया सावन बद एकम दिन । लाडणुं सहर अमंद ॥ तुम० ॥ १३ ॥ इति० ।

अथ ढाल ६ छठी राग० माढ० तोरे दांतकी बतीसी ढोला ऐसी प्यारी लागै ॥ तोरी आंख रसीली ढोला सुरमों प्यारो लागैजी । छल बलिया ढोला आन जगाई वैरी नींदमें ॥ लस करीया ढोला ॥ परदेशों० ॥

यश धारी गणपत थांराजी चरणांमें म्हांरो जीवजी । बस रह्यो नित प्रतही । कान्ह नंदनजी सुं लागी म्हांरी प्रीतजी ॥ एआं० ॥ तोरे सांसनको छिबभारी । नीकी प्यारी लागै ॥ तोरी मुद्रा मोहनी स्वामी । मुजनै प्यारी लागैजी ॥ यश० ॥ १ ॥ अधम

उद्धारन नाथ निरंजन। भव भंजन भग-
वंत॥ पाखंड गंजन। भवि मन रंजन॥
जिन मघ मांहे महंतजी॥ यश०॥ २॥
षट्दश षोपम षोपै गणपत। उत्तराधेन
मंझार॥ बेपरकार छतीस गुणाधर॥ सुव
आवश्यक सारजी॥ यश०॥ ३॥ मेरू सो
धीर सयंभु सो गंभीर। तन तावनकों सूर॥
ज्ञान उज्जास प्रगट कियो जब। भागगयो
अघ भूरजी॥ यश०॥ ४॥ षट् खंड ज्यु
षट् मत्त भणी तुम। साझ लिया धरिखंत॥
शील अखंडित पालतागणि। नव निद्धि
आउ सोहंतजी॥ यश०॥ ५॥ दूपा कलु
कालमें तुं धणीजी। तुं देवन पति देव॥
चिन्ता चूरन आशा पूरन। मैं करता तुम
सेवजी॥ यश०॥ ६॥ छासठ सावन युग
बदी पांचम। लाडणुं सहर सवाय॥ जोरा-
वर तोरा गुण गावै॥ लुल लुल शीश

सुखायजी ॥ यश० ॥ ७ ॥ ॥ इति० ।

अथ ढाल ७ सातमी० राग० विहाग० चंदा प्रभु भेटत भव दुःख जावै ॥ एदेशी०

प्रभु तोरा च्यार तीर्थं गुण गावै। थांरै सुख साता नित चावै ॥ प्र० एआं० ॥ श्री भिक्षुके सप्तम पाटे। डाल जनेंद्रसा सुहावै ॥ कहां लग करूं ओपमां वरणन। सुर गुरू पार न पावै ॥ प्र० ॥१ ॥ दोय वर्ष थया सरीरकारण पिण। दिन २ अधिक लखावै ॥ निरबल पणो फुन सोफ इत्यादिक। अन्नकी रुच नहीं थावै ॥ प्र० ॥२ ॥ कारण करि वेदन बहु तोपिण। स्वकर कार्य करावै ॥ सूरवीर साहासीक पणोप्रभु। खातर में नहीं ल्यावै ॥ प्र० ॥ ३ ॥ सन्त कुमार चक्रीथया चौथा। सुत्रा मांहि बतावै ॥ जेहनी परे प्रभु वेद न खमख्या। साहसपो दरसावै ॥ प्र० ॥ ४ ॥ गज सुख माल कुमार

बैरागी ॥ सोमल वैर काढावै । खैरका खीरा धच्चा शीशपर ॥ खद बद खीर पकावै । प्र० ॥५॥ सोमल पर कछु द्वेस न आण्यों ॥ अपणा कर्म उड़ावै ॥ जेहनी परे प्रभु सम परिणांमें वेदन सहन करावै । प्रभु तीरा च्यार तीर्थ० ॥ ६ ॥ अरजन माली थयो रुषेश्वर । भिच्या अवसर जावै ॥ घणा लोक देखीनै त्यांनै । बहु बिध कष्ट उपजावै ॥ प्र० ॥ ७ ॥ पिण मुनि राग द्वेस नहीं किणपर ॥ अपणांही संच्या हटावै । तेह नी परे प्रभु पंचम आरैमें ॥ चौथो आरो बरतावै ॥ प्र० ॥ ८ ॥ चरम जिनंद सह्या कष्ट घणेरा । सम चितनै सम भावै ॥ तेह जिसा आप भर्थक्षेत्रमें । दूजो को न लखावै ॥ प्र० ॥९॥ बहु वेदन तोही च्यार तीर्थनै। भिन २ सीख दिरावै ॥ अमृत धारा बचन श्रवण सुण । सर्व भगन होय ज्यावै ॥ प्र० ॥

॥ १० ॥ महा विदेह सम क्षेतर लाड़णुं । ऐसा पुर्ष उद्धरावे ॥ धन्य घड़ी धन्य भाग्य जेहनो । स्वाम दर्शन नित पावे ॥ प्र० ॥ ॥ ११ ॥ कोड दीवाली तपो स्वामजी । एह अविलाष करावै ॥ जोरावर प्रणिपत जर थांरा ॥ हर्ष २ यश गावै ॥ प्र० ॥१२॥ संवत छासठ द्वितीया सावन सुद ॥ चौथ शुक्र कहिवावे ॥ सभा वीच गुण वरणन करके । बार २ वलिजावे ॥ प्र० ॥ १३ ॥ इति० ।

अथ ढाल ८ आठमी राग हरिवसमें मेरी सहीयोए । आज म्हांरो लालन आवे लोए ॥ एदेशी० सहर ऊजेणी दीपती । जात पीपाडा सार ॥ लाल कन्हीयाको लाडलो । जडांवां कूच उजार ॥ म्हांरा ग्यानी गुरूजी वो थांरे । सुख साता अब थाव ज्यो ॥ म्हांरो मन हुलसावे । म्हांरो तन विकसावे म्हांरो उमग न मावे ॥ म्हांरा पुज वड़भागी

वो थांरै ॥ सुख साता अब थाव ज्यो ॥१॥ एम्हां० ॥ मुनिपट भिक्षुके छजे ॥ डालचंद सुखकार ॥ भर्थ मैं प्रगट्यो भान ज्युं । मिथ्या ध्वांत बिडार ॥ म्हां० ॥ २ ॥ सरीर कारण बहु बिधकरी । खम रख्या दृढ़ता धार ॥ मंदिर गिर सम खामजो । अडिग भाव अपार ॥ म्हां० ॥ ३ ॥ बसेष औषध लेवे नहीं । साहा सीक सिरदार ॥ परवा नही कोई बातरी । तरण तारण रो विचार ॥ म्हां० ॥ ४ ॥ सूरो पूरष रणनै बिखै ॥ अरियण करै संघार ॥ जिम प्रभु कर्म रीपू भणी ॥ कापे बिवध प्रकार ॥ म्हां ॥ ५ ॥ देश २ मैं थांहरा । चावै शुभ समीचार ॥ बाट जोवै बहु प्राणीयां । ज्युं चकवी दिन-कार ॥ म्हां० ॥६॥ हुवे तन दुरुसती आपरै । इम चाहै नर नार ॥ च्यार तीर्थमें आनन्द हुवे । बरतै मंगलाचार ॥ म्हां० ॥७॥ साता

हुवां श्रीपूजरे। होसी जय जयकार ॥ एह अविलाषा मांहरी। पूरवसे किरतार ॥ ॥ म्हां० ॥ ८ ॥ जोरावरकी वीनती। मानो प्राणां धार ॥ सावन सुद नवमी दिनें ॥ पमणत हर्ष अपार ॥ म्हां० ॥ ९ ॥ इति०

अथ ढाल ९ नवमीं राग० तरकारी लेल्यो मालण आई बीकानेरकी ॥ तर० ॥ एदेशी० सरणां भवि लेल्यो डाल मुनिन्द गण इन्दके। सर० एयां० डाल गणिन्दके सरणां सेती। पामै भव जल पारो ॥ दुःख संकट सबही मिट जावै। होज्यावै निस्तारोरे ॥ सर० ॥ १ ॥ स्वाम भिक्षणको पाट सातमों। डाल दिपा बनहारी ॥ भर्थं चेचरमें सिंह जिम गुंजै। साहस जिन अनुहारोरे ॥ सर० ॥ २ ॥ शशी सम शीतल वदन तिहारो। तेजस्वी दिनकारो ॥ भव भय भंजन जन मन रंजन। शिव मगके

दातारोरे ॥ सर० ॥३॥ शील रूप रथ सझ्यो सजीलो । तीन गुप्ति असवारो ॥ ध्यान रूपी ये गजकर घूमे । बुद्धि तुरंग विचारोरे ॥ सर० ॥४॥ पंच महाव्रत सुभट विकटअति । सैन्या सुयश अपारो ॥ तपकी तोप ज्ञान गोलासें । अन्य मत्तकों फटकारोरे ॥ सर० ॥ ॥ ५ ॥ सुमति रूप कस कमर कटारी । त्याग्यां खड्ग करधारो ॥ जयना रुकी ढाल ढकणथी । आवत कर्म विडारोरे ॥ सर० ॥६॥ बहु विध मोह विकट दल ठेलण । पाखंड पेलणहारो ॥ सुत्र सिद्धान्त बचन घन गरजत वाजत जिम जल धारोरे ॥ सर० ॥७॥ जो भवि जन तोरा गुणगासी । देसी पूठ संसारो ॥ कर्म खपावी शिवपद बरसी । करणी खेवो पारोरे ॥८॥ पैंसठ जेठ शुक्ल पक्ष बारस लाडणुं सहर मंझारो । जोरावर तुम चरणां में चित ॥ सरणांके आधारोरे ॥ सर० ॥९॥ इति०

अथ ढाल १० दशमीं राग ५ ठेमरकी अम्मा मुजे अच्छीसी टोपी मंगादे० एदेशी० स्वामी मोरी नइयाको पार लंघादे पार लंघादेर मुक्ति तो मोय बकसादे ॥ स्वा० ॥ एथां ॥ चरणों मे लेटुंगा ॥ दुःख दंद मे टूंगा ॥ वारुंगा तन मन हां हां हां ॥ प्रान करूं२ कुरवान हमहम हम ॥ स्वामी० ॥१॥ राग० दुसरी अमवाकी डाली तले आलीरी झुलना झुलादे० एदेशी० ॥ मज धारासें नइया ॥ स्वामीरी पार लंघादे० म० मेरे पुज्य सेती करत अरज ॥ अरजीपे मरजी करादे० म० एथां० लंघांने वाला तुंहीं है सिरताज भला ॥ तिहारी मुद्रा मोहनचंद उजास भला ॥ कब दिखलाते तखत ह-जारा भला ॥ दर्शप्रीयारे हय तो सबजनकों लागे भला ॥ प्यारी लासानी है प्यारी नुरानी है सूरत सोहानी है ॥ तुं मुजपार

लंघादे ॥ सु० २ ॥ राग० तीसरी चलती चपला चंचल चाल० एदेशी० मुज लागत प्यारी भारी डाल गर्णिदछिब तोरी ॥ सिद्धान्त बचन भल बोलै ॥ बयनन अम्रत रस घोलै० । सुण भविमन बहु हर्ष भयोरी ॥ मु० एआं० ॥ जलदी तारो मुज भणी करदे नइया पार ॥ सरण गहेकी बांहकों पकर करो भव पार ॥ आहाहा बंइयां मोरी ॥ ओहोहो आप गहोरी ॥ भव बार सेती पार करोरी ॥ सुज० ॥ ३ ॥ राग चौथी तोरी छल बल है न्यारी तोरी कलबल है प्यारी ॥ एदेसी० तोरे सांसनकी छिबभारी ॥ जैसें खिलरही केसर क्यारी ॥ थांरा संत सती गुणभारी मोरे स्वाम० एषां० ॥ च्यार तीर्थनित करता दर्शन ॥ दर्शन कर होता परसन मोरे स्वाम ॥ नित जपता है जाप ॥ तोरी धरता है छाप ॥ ज्यांरा कटता है पाप ॥ एजी

बाबाबा-बावाबा बावाबा एजी बावाबा तोरे सांसनकी छिब भारी० ॥ ४ ॥ राग० पांचमी० बटवा गूंदण टेरे मीजाजीडा० एदेशी० नइया पार लंघादे मोरे पुजजी नइया पार लंघां० ॥ हांरे मोरे प्यारे सुखकारे प्रभुजी मोरी नइया पार लंघा ॥ एआं० जोरावर तोरे दर्शको प्यासो ॥ हर्षर गुण गाय ॥ नित उठ तोरा जपन करत है ॥ तन मनथी लिवलाय ॥ मोरे प्यारे० नइया० ॥ ५ ॥ इति० ।

अथ ढाल ११ एका दशमी० राग० प्रभातीः वा कालींगडो ॥ प्रात उठी श्रीडाल गणिंदको [भजन करी भवि भाव धरी ॥ संकट कोट कटे भव संचित ज्यो ध्यावे मन उमंग करी ॥ प्रा० एआं० सहर उज्जेणी देश मालवो ॥ ओश वंश अवतार धरी ॥ मात जड़ावां तात कनीलाल ॥ तास घरे

बहु लील करी ॥ प्रा० ॥ १ ॥ उगणीसे नव कै गणि जन्म्यां ॥ ते वीसे संयम सखरी ॥ चोपन माघ वदी दुतिया दिन ॥ भिचु गणिंदको तख्त वरी ॥ प्रा० ॥ २॥ बहु सुत्र सिद्धान्त विलोकी ॥ काव्य श्लोक अरु छन्द पद्दरी ॥ ज्ञान घटा घण जन घट घाली ॥ देश विदेश मांहे विचरी ॥ प्रा० ३ ॥ विचरत २ वर्ष पैसठै ॥ चौमासो कियो हुलस धरी ॥ चंदेरीमें ठाठ लगायो ॥ वरषायो बहु ज्ञान झरी ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ चौमासो उतरीयां विहार करायो ॥ पिण कारण कम सत्ति करी ॥ विहार कर्यो नहीं गयो स्वाम जब ॥ दुसर चौमासो कियो फरी ॥ प्रा० ॥ ॥ ५ ॥ शरीर निपट गयो छीज दिनोंदिन ॥ अन्नकी रुच पण कमती परी ॥ सूर वीर साहसीक पणे प्रभु ॥ काट्या संचित कर्म अरी ॥ प्रा० ॥ ६ ॥ च्यार तीर्थने बहु विध

करके सोखामण दीधो जबरी ॥ सर्व जीवोंसें किया खांमणा ॥ बार वार मुखसें उचरी प्रा०॥७॥ भाद्रव शुद बारस संध्याको ॥ प्रतिक्रमण शुध भावकरीं ॥ अठ दश पाप आलोवो स्वामजी ॥ पहुंता गणिवर स्वर्ग सरी ॥ प्रा० ॥ ८ ॥ इण कलुकालमें एहवो गणिवर दीपायो जिन मार्ग खरी ॥ याद आया तनमन विकसावै ॥ भवि जनके हिय उल्लसरी ॥ प्रा० ॥९॥ जोरावर है दाश आपको ॥ जपन करत पल घरी घरी ॥ उर बिच ध्यान लग्यो गणि तेरो ॥ एरावत ज्युं वन कजरी ॥ प्रा० ॥ १० ॥ छासठ संवत कुंवार शुक्ल पक्ष ॥ परव दशेरो दिन जबरी ॥ हर्षर गणिवंर गुण गाया ॥ कलकत्तो है महानगरी ॥ प्रा० ॥ ११ ॥ इति ।

अथ श्री डालचंदजी म्हाराजके गुणांका समस्या पूरतीका श्लोक ॥ समस्या एह के

डाल गुरू गणिके गुणगायो० ॥ देश विदेश फिस्यो बहुतोपिण ॥ डाल जिसो गुरू कोयन पायो ॥ सांसन नंदन बन्न सो देखके मोमन हर्ष बधोरे सवायो ॥ पुन्य अंकूर प्रगट भयो जब ॥ स्वाम भिक्षनको मारगपायो ॥ खोपुर सुंदर नार बरन कूं ॥ डाल गुरू गणिके गुण गायो ॥१॥ उदै भयो उदिया चल सो गणि ॥ भिक्षुको मार्ग भलोही दिपायो ॥ घालत ज्ञानको जोत घनाघट ॥ मिथ्यात् रूप अंधार मिटायो ॥ तारक स्वाम सबे विध लायक ॥ पेख छटा मुज आनन्द आयो ॥ खोपुर सुंदर नार बरन कुं डाल गुरू गणिके गुण गायो ॥ २ ॥ इति० ।

अथ श्री जेठांजी महा सतियांजी रीं ढाल ॥ राग मति जावो प्ररदेश भंवरजी होय रोटी देणां ॥ एह चालमें० ॥ भजो श्रति जेठांजी भारी ॥ सर्व शत्यांमें शोभरह्या

है ज्युं केसर क्यारी ॥ एश्रा० ॥ चुरु सहर श्रोश वंश नीको ॥ जात नाहेटा अधिक दीपता सारां शिर टीको ॥भ०॥१॥ पिता सेवा रामजी सुखकारी ॥ कानाजी री कुख आन कर लीनो अवतारी ॥ भ० ॥ २ ॥ उगणीसे एक संवत धारी ॥ जन्म भयो शुभ घड़ी नचत्र ॥ शुभ बेल्यां सारी ॥ भ० ॥ ३ ॥ मात पितु व्याह रचो भारी ॥ सुगन मलजी बैद पति वर पायो सुविचारी ॥ भ० ॥४ ॥ पूरब कृत कर्म उदै आई ॥ पति बियोगथयो शति मनमैं ॥ वैराग्य हद लाई ॥ भ० ॥ ॥ ५ ॥ जगत सुख जहर समां जाणी ॥ उग-णीसै बीसै दिच्चा लीधी ॥ संवेग चित आणी ॥ भ० ॥६॥ शति मुख निरमल जिमचंदा ॥ जीत गणीको सेवा सारी ॥ तन मन हुल सन्दा ॥ भ० ॥ ७ ॥ जीत गणि परसनचित कीनो ॥ शतियां मांहे अधिक कायदो थांरो

कर दीनो ॥ भ० ॥ ८ ॥ मघवा गणि मांयक यश धारी ॥ तास चाकरी बहु विध कीधी ॥ हित चित लिव लारी ॥ भ० ॥ ९ ॥ डाल गणि गुण संपन जाणी ॥ पवि तरणीको पदवी दीधी ॥ कीधी अधिकाणी ॥ भ०॥१०॥ गणांधिप डाल जबर गूंजै ॥ तास पुरण मरजी थांउपर ॥ प्रवल पुन्य पुंजै ॥ भ० ॥ ११ ॥ सर्व सतियांनै सुमति देवो । माइत पणांकी मरजी करणे ॥ सहु संभाल लेवो ॥ भजो० ॥ १२ ॥ प्रात्त समर्ण थी कर्म टूटै । मुखड़ो देख्यां पातिक नाठै ॥ दुरगति दुःख छूटै ॥ भजो० ॥ १३ ॥ जोरावर लुल २ शिरनावे । निस दिन ध्यान धरै उर भीतर ॥ मरजी तुम चावै ॥ भजो० ॥१४ ॥ संवत उगणी से छासठ आयो । श्रावन वदि छठ कलकत्ता में गुण तोरा गायो ॥ भजो ॥ ॥ १५ ॥ इति० ।

अथ श्री उपदेशकी ढाल ॥ राग० मोरा जगाके जोवन लूंटारे२ ॥ लूंटा लुंटा लुंटा ॥ मोरा० एदेशी० जरा जाग जिया क्युं सोतारे२ ॥ सोता सोता सोता ॥ जरा० एआं० दोय घड़ीको तड़को रह गयो ॥ अहेल जन्म क्युं खोता ॥ जरा० ॥१ ॥ भव सागर कारागृह सरिखो ॥ कुटम्ब विटम्ब दुःख दोता ॥ जरा० ॥ २ ॥ जोबन लहरा रंग पतंग सम ॥ चपल विजल चम कोता ॥ जरा० ॥ ३ ॥ पुत्र कल्यत्र घर अरु संपत ॥ सहु अथिर समभोता ॥ जरा० ॥४॥ मोह नींद वस भयोरे दिवानो ॥ निज गुण अम्बु छिपोता ॥ जरा० ॥ ५ ॥ तुज गुण ज्ञान दर्शन चारित्र तप ॥ जिसकुं कांय लकोता । जरा० ॥६॥ कुगुरु वेषधार हृदयमैं ॥ जहर बीज क्युं बोता ॥ जरा० ॥ ७ ॥ कुगुरु कुदेव प्रसाद चेतानंद ॥ खाय कुगतिमें गोता

॥ जरा० ॥८॥ सुगुरू सुदेव सुधर्म प्रसादे। ज्ञान दीपक घट जोता ॥ जरा० ॥ ६ ॥ जपतप संयम धर सुध करणी ॥ कर्म मेल सहु धोता ॥ जरा० ॥ १० ॥ जोरावर कहै प्रभु भजन बिन ॥ कोई न पार पू गोता ॥ जरा० ॥ ११ ॥ इति० ।

अथ श्री मांणक गणिके गुणांको सत्वन ॥ राग० ॥ छाइ घटा गिगनमैं कारी ॥ राजल कुं व्रहा दुःखभारी ॥ एदेशी० मांणक गणिराज उद्वारी ॥ में जाउं तुज बलि- हारी ॥ एआं० भिचु भारी माल ऋषि- रायो ॥ जय गणपत कलश चढ़ायो । ज्यांरो दिन२ तेज सवायो ॥ वांसांसण खूब दि- पायो ॥ सुयश चिहुं दिश बिच छायो ॥ भविजन मन सुण हर्षायो ॥ भड़० पंचमें मघराज उदारी ॥ ज्यांरो शोम्य प्रकृत सुख कारी ॥ ज्यांनै याद करै नर नारी ॥तोड़०

गणि ऐसा भव तथा मांय ॥ अर्थरै मांय ॥ पाखंड दियो टारी ॥ मे० ॥ १ ॥ मघराज तणै पटधारी ॥ माणक गणि जगमें उद्धारी । दीपत जिम तेज दिनारी ॥ सहु आय नमै नर नारी ॥ ज्यांरो पाट दीप रह्यो भारी ॥ ज्युं खिल रही केसर क्यारी ॥ झड० ज्यांरो तीर्थ जगमें गाजै ॥ नंदन बन ओपमछाजै ॥ रमियां भव दुख सहु भाजै ॥ तोड० गणि राज तीर्थ सुखकार ॥ दर्श दिलधार ॥ तिरै भवपारी ॥ मे० ॥ २ ॥ षट् त्रस गुणै धर खंता ॥ परिसा बावीस जिपंता ॥ अणा-चार बावन टारंता ॥ शुद्ध अहार पाणी भोगंता ॥ गणि सुत्र अर्थ भाषंता ॥ घनश्चिय बीहै समकित तंता ॥ झड० मुनि आगम नै अनुसारै ॥ गणि बचन वदै सुख कारै ॥ तरता निज पर जन तारै ॥ तोड़० गणि ऐसो है गुण धारी ॥ सुत्त दातारी ॥ भवन

के बारी ॥ मैं० ॥ ३ ॥ वर्षे जलधर जिम वाणी वलि गूंजे सिंह समाणी ॥ वाणी रस संवेग पिछांणी ॥ पिवे जन प्रेम प्रमांणी ॥ सुण चात्रक मन हर्षाणी ॥ केइ संयम ले शुध प्राणी ॥ झड० गणि भवि जीवांने तारै। भवनां दुःख भंजण हारै ॥ करता गणि पर उपगारै ॥ तोड० गणि रतनगढ़ मउधार ॥ कियो उपगार ॥ दर्श दिय भारी ॥ मैं० ॥४॥ षट् खंड जेम षट्मत्ता ॥ गणि चक्रि जिम साधंता ॥ क्षम्यां खड्ग धर खंता ॥ गणि नव निधि बाड सोहंता । गणिनां दर्शण पावंता ॥ केइ जग निरमल पुन्य वंता ॥ झड० इम गणि गुण अन्तन आये ॥ किम एकै जीभ कहाये ॥ बीराणी रतनगढ़ मांये ॥ तोड० एह वीनती मंगल कार ॥ अर्ज अवधार ॥ तारो भवपारी ॥ मैं ॥ ५ ॥ इति० ।

॥ अथःढाल लीष्यते ॥ चाल लावनीकी ॥
॥ भविगणीमुख चंदा ॥ दर्शनकरहरषैनैनच-
कोरजी । भवि० एआं०

आदनमुं अरिहंत आदजिन सांसनमा
हाहितकार । चरमजिनंद महावीरजीसथा
रोपंथसदासुखसार । सुधर्म जंवुआदपाटो
धर परभवदिकलीयो धार । तिण अनुसारे
हुणहीजआरे भिखुगुणभंडार । उडावनी: ॥
पाटोधरभारिमालजी । रायरीषीरीधवंत। जेः
मघःमांणकलालपाटवी । डालचंदपुनवंतपंथ
धरवीरजिनंदा ॥ दर्शन ॥ १ ॥ मनोहरमाल
वदेशमेसकांई नगरउजैनी सार । उसवंसक
वदूधकउपतापीपाडाधरप्यार । साहकनई
यालालजीसघरसती जडावांनार । तास
कुखअवतारलीयो प्रभुगुणमनीरयणभंडार ।
उ० नौकेसुद आसाढनी । चोथचंद्रसुभवार ।
सुतमुखचंद्र विलोकतांसकांइ । वरत्याजैजै-

कार । धारमनइधककआनंदा । दर्शण० ॥२॥
पतीवियोगजोगलीयो माता । सहीवीसके
साल।दिच्छादिनपटलावद महोछवइं द्रघटाइग
चाल। सतीगोमांजीहाथहरषस्युं आपअच्छा
पुनपाल । तेइस के भादो वदवारस आप
चरणगुणमाल ।द० दमरवरमदश च्यारकी ।
रच्छावालब्रह्मचार । चरणगांवइंदोर दिच्छा
गुरुहीरालालअणगार । सारसुखसंयमहंदा ।
दर्शण ॥ ३ ॥ इकतीसैकीसालगणा धिपसिं-
घाडोसुखकार । संतचहुंनाथटुसुंसकांइक-
रतो भक्तिनिसतार। कछगुजरातमेवाडमालवै
विलुधकियोउपगार । चोपनपोषवदीजोधानै
चौथगनीपदधार। द० टूजमहावदीलाडनुं ।
च्यारतीर्थजिनचंद । भिच्छुतखतवीराजीयास
कांइ। साहसजेमजिनंद । इंदजिमछटादि
पंदा ॥दर्शण॥४॥ षटदसउपमओपैगनपतउत-
राधेनमंझार । दसमें अंगेतीसकहीचोरासी

अनुयोगद्वार ॥ युग परकार छवीसगुनाधर सुत्रआवस्यकसार । यतिधर्मदशविधनाधारी सामायंग सुखकार । उ० दोष बयांलीस टालता । वावनटालैअनाचार पांचदोषमांडलैराटालै । गुनकरग्यानभंडार । धारसंपद अष्टदा ॥ दर्श ण ॥ ५ ॥ जिमगजरथवाजी प्यादलकर चक्रवरतदलसूर । तिमगणिनांण चरणतपदर्शन मिथ्यातिम्नकरदूर । क्षमानाल संतोष जामखीग्यांनगोलाभरपूर । मुगत नगरमर दिया मोरचा अष्टकर्मदल चूर । उ० सुरत अश्वचढियागणी । सीलटोप सुखदाय । सुमत कमरकस गुप्त कटारी । मारी च्यारकषाय । जाय अगदूर भगंदा ॥ दर्श ण ॥ ६ ॥ अहिरावण सांसन सदमाता निसदिनधर्म उद्योत । मनमाहुतवसकीनो-जरनो अंकुसके समजोत । पंचाननजिमगान मेगुंजेदिनकरतेज सद्योत । अविभयअंजन

नरकनिवारण तारण अवनीपोत । उ० दादुरजिम हरषितभये । उदैचंद अवदात । संतसत्यांगुणमाला गावण । हुकमऋरोगनी नाथ । तातऋनिलालकी नंदा । दरशण ॥७॥ राम लाल गोविन्द जुहार मल १३ पृथी राज ४ मन रंग ॥ राम सुख ५ गणे-श पनै लाल ७ छबील ८ माता संग ॥ उदै राम ९ सैंजोडै ईश्वर १० आगै नार-उमंग ॥ फोज मल ब्रह्मचारी नवल ॥१२॥ नारो लारै उम्ररंग ॥ उ० राम चंद १३ छजमालजी ॥१४ ॥ जवानमल गुणखान ॥ सिवकरण १६ अभैराज १७ अठारा ॥ पनरै कुंवाराजाण आण धरजीत मुनिंदा ॥ द० ॥८॥ भजोकजोडीमल १ चांदमल २ अणंदराम ३ चुनीलाल ॥ ४ अमरचन्द ५ गोरीदास पुनम चंद ६ दुजापन्नालाल ८ ॥ मगन मल ९ कालुराम १० जेयचंद ११ तोलु-

मातासंगपाल ॥ डायमल १२ मुनि भजो
चिरंजी १३ छगनमल १४ गुणमाल ॥ उ०
पंचमपट पांचुंदमी मुनिमघवाधरी आण ॥
दोयपरणीज्यावारै कुंवारा॥ एचवदैगुणठाण ॥
जाणलियासहुजगफंदा॥ द०॥९॥ लीलाधर१
मुनिध्यान धरत है दुलीचंद २ दिनकार ॥
दीपचंद ३ मुनिखेमराज ४ सुत साथे
संयमक्षार ॥ भजोभीमजी ५ मातासाथे
छोडदियो घरसार ॥ नथराज ६ भग्नी शुभ
लछिनिजरकंवर निस्तार ॥ उ० साकरचंद
७ कस्तूरजी ८ मांणकहदमुनि आठ ॥ वर-
तारामैतेजमाल ९ चरणदेइविराज्यापाट ॥
ठाठ गणिराजमुनिंदा ॥ द० ॥ १० ॥ कालु
राम माता ट्यासुत ब्रह्मचारी १ सतमाल
२ ॥ कल्यानमल ३ नरंजन ४ नथमल ५
विनायक ६ छंगालाल ७ ॥ मन्नालाल ८
प्रियाप्रतबोधी जेमल ९ जाणीजाल ॥ पूस-

राज १० दोलतराम ११ जोरजी १२ रुघ-
नाथ १३ रंगलाल १४॥ उ० परतावराम १५
हीरालालजी १६ सागर १७ वक्रमल १८
ख्यात ॥ दुजा चंपालाल १९ ठंडीराम २०
वैनमनोरांसाथं ॥ हाथगणिडाल मुनिंदा ॥
॥ द० ॥ ११ ॥ केसरीमल २१ कनकमल २२
कुन्दण २३ छोगमल २४ रणजीत २५॥ घासी
राम २६ गुलराज २७ संत सतवीस सहु-
सुवनीत ॥ केइकुंवारा केइयकपरण्यां सारा
पूज्यवनीत ॥ शल्यांदोयसै दस मुनि अड सठ
पूज्यआण धरप्रीत ॥ उ० ढालकहुं सतियां
तणी ॥ संप्रतविचरैख्यात ॥ रायऋषिवारा-
सुंलेकर ॥ सप्तमपट अवदात ॥ मातसति
जड़ावनंदा ॥ द० ॥ १२ ॥ प्रथम पविवणी
पयप्रणामी ॥ कहुं रायऋषिवार ॥ब्रह्मचारण
कस्तुरां १ जमां २ परणी संजमधार ॥ जीत-
वारै प्रथमचूनांजी १ रायकंवर २ ब्रह्म-

धार ॥ भूरांजी ३ सैंजोड सुहागण ॥ इर्थी-
चंदसंगधार ॥ उ० जेठांजी ४ जुगतोधरो
सब सतियां सिरमोड ॥ भवदुःख भंजन ॥
५विचित रंजन॥ अरिगंजन अघतोड ॥ मोड
दिया मोहदल फंदा॥द०॥१३॥ तीजां ५सती
सुहागण ब्रह्मण इस्तु ६ उदैकुंवार ७ लछुजी
८ झूमरतांजी ९ भजभुरांजी १० ब्रह्मचार ॥
जडावजी ११ सैं जोडमयाचंद ॥ मखतु १२
रहीकुंवार ॥ चान्दां १३ सति सुहागणपति
इश्वरजी संयमलार ॥ उं० वीगां १४ जडावां
१५ लछमा १६ टोलां १७ सुतसंगधार ॥
फूलकंवारी १८ चंदणा १९ चिमना २०
चोथां २१ ग्याना २२ सार ॥ तारनांनु २३
सुजहंदा० द० ॥ १४ ॥ हरखु २४ कुनणा
२५ रोधु २६ तोजां २७ साकर २८ सुन्दर
२९ सार ॥ सतिसुहागण मानकंवर ३०
कुसमांजी ३१ सतिकुंवार ॥ कस्तुरां ३२

चंदा ३३ बिहुं परणी गंगा ३४ सोरेकुंवार॥ फुलांजो ३६ महादेवां ३७ सुहागण ॥ रायकुंवर ३८ ब्रह्मचार॥ ढ० कस्तुरां ३९ इंदोरकी ॥ मोजां ४० जयकुंवार ४१ बरजुजी ४२ ॥ नंदु ४३ छोटांजी ४४ सिरदारां ४५ प्राणा ४६ धार ॥ तारहीरां ४७ गोगंदा ४८ ढ० ॥ १५ ॥ चंपाजी ४९ वोरावडकेरी कस्तुरां ५० आमेट॥जडाव ५१ सोरेकांवर ५२ वोरावडतीजां ५३ बकाणीनेट ॥ दुजीऊमां ५४ सतिचोपनमी । जोल वारा लगठेट॥ हिव मुनिमघराज वारेनी ढाल गायकरुं भेट ॥ ढ० लीछमांजी १ ब्रह्मचारणी ॥ नांनु २ कुसम ३ राजान ४ नोलां ५ नोल मुनिके लारे ॥ लियो चरण गुणखाण ॥ जाणसें जोडदियंदा ॥ ढ० ॥ १६ ॥ किस्तुरां ६ गोरांजी ७ नोजां ८ सिणगारां ९ मघुजी १० सति जुहारां ११ सुखां १२ भजल्यो ॥ सिण-

गांरां १३ फुनदुजी ॥ अम्मां १४ रूखमां १५ फूलां १६ गोगां १७ कालांजी १८ पै फूजी १९॥ बालब्रह्म चारणजीतांजी २० रायकंवर २१ रूपूजी २२ उ० ॥ धन्नां २३ सुतसंगसंयमी ॥ चंदां २४ गुलाब कुंवार २५ ॥ हीरां २६ भजो छोगांजी २७ सुत संग कानकंवर २८ ब्रह्मचार ॥ सार छोगां २९ सुखकंदा ॥ द० ॥ १७ ॥ सिरा ३० सति गंगाजी ३१ सुतसंग भजल्यो सति जुहार ३२ ॥ भीखां ३३ सति सुहागण मीरां ३४ तोजीसति सिणगार ३५॥ केसरजी ३६ छोगां ३७ बीदासर ॥ सूजांजी ३८ सुखकार ॥ जडावजी ३९ आसांजी ४० तोजां ४१ जीतां ४२ बीजीधार ॥ उ० ॥ पैफां ४३ चानांजी ४४ भजो ॥ सिणगांरा ४५ चोथी जाण ॥ पैफां ४६ दुसरी सुगनां जी ४७ लग ॥ सात चालीस पीछा-ण ॥ आंण पूरणमल नंदा ॥ द०

॥ १८ ॥ माणकइद प्रथम लिछमांजी १ विरधां २ हस्तु ३ धार ॥ सति सुवटां ४ जड़ाव ५ कांवरां ६ रामकांवर ७ करपार वरजु ८ सोना ९ सति सुहागण ॥ नांनु १० निजरकांवार ११ मघु १२ चूना ॥ १३ दुजी सोना १४ अणाचंग १५ वाल्लां १६ सार ॥ उ० धन्ना १७ चांना १८ लगनमुं ॥ षष्टमपटदश आठ ॥ अबकहुं हजुरी ढाल सात्यांनी ॥ मेट भर्म ओचाट ॥ काट मुज भवके फंदा ॥ द० १९ ॥ सासु १ बहु २ बेहुं नांव दाखांजी बहु सुहागण ख्याल ॥ कालुरामजी पतिसें जोड़े सुत्त सतमल साथ ॥ सति सुहागण नमुंनाथांजी ३ प्रथीराज मुनिहाथ ॥ खेमुंजी ४ चंपा ५ इन्द्रुजी ६ ओशवंश अखियात ॥ उ० रंभा ७ सति सुहागणी ॥ सोरीपालसें जोड़ ॥ सुताखुमाणा ८ संग कुंवारी ॥ लाड कुंवर ९ कर कोड ॥ छोड़ दिया सगपण

फंदा ॥ द० ॥ २० ॥ डूमरतां १० सुन्दरजी ११ भूरां १२ सुगना १३ सुगण अपार ॥ दुजी डूमरतां १४ हीरां १५ सुखां १६ हेतु १७ तखतां १८ तार ॥ पैफांजी १९ सोना २० सुखदेवां २१ केसर २२ सेरां २३ सोर ॥ रतनांजी २४ चानांजी २५ भतु २६ लाखां २७ चंपा २८ धार ॥ उ० जमना २९ जल-जिम निरमली ॥ लिछमांजी ३० मूंमास ॥ दुजीचानां ३१ भेजो हगामां ३२ सति अमे दां ३३ खास ॥ पास पन्नालाल मुनिंदा ॥ द० ॥ २१ हेमांजी ३४ पन्नाजी ३५ मघां ३६ जीवुजी ३७ जगतार ॥ मोलांजी ३८ एजणाजी ३९ भजल्यो ॥ बखतावर ४० सिर-दार ॥ ४१ भजोहगामां ४२ भूरां ४३ग्यानां ४४ ॥ छोगां ४५ पुलीलार ॥ परतावांजी ४६ भजो सुवटां ४७ राखांजी ४८ दिल-धार ॥ उ० जडाव ४९ फूलांजी ५० भजो ॥

फुनजडाव ५१ दोनुधार नोजांजी ५३
लाभुजी ५४ दिरयां ५५ इन्द्र ५६ दुजीतार॥
सारगोगां ५७ सुखदंदा ॥ द० ॥ २२ ॥ ब-
गसु ५८ सुगना ५९ हुलासांजी ६० फुन॥
संगनुं ६१ पुरमेवाड ॥ भूरां ६२ पलाणी ॥
गीगांजी ६३ फुन ॥ भूरां ६४ टाटगढवार॥
पारबतां ६५ जतना ६६ भजचानां ६७ ॥
सोना ६८ बेहुंसंगधार ॥ जडाव ६९ चोथी
मनोहरकांवरी ७० चरणभाबूकीलार ॥ ७०
भूरां ७१ चानां ७२ नांनु ७३ तिहुं ॥
साथे संजमभार ॥ हुलासांजी ७४ संगकेसर
कांवरी ७५ अतिबालक हुसियार ॥ धारचर्ण
लियो मुनिंदा ॥ द० ॥ २३ सरदार सहर
की सतिजडावा ७६ रीणांसुन्द्र सोभंती
७७ बीदासर कीभतु ७८ सुतासंग मखु ७९
सुखमुखकांती ॥ सिरसांजी ८० दाखांजी
८१ चोथी दुजी ग्यानां ८२ गुणवंती ॥

नांनुजी-८३ पारवतां ८४ वेहुं चरण संग पुनवंती ॥ उ० अजबु ८५ चंपा ८६ तीसरी सति पियारां ८७ सार ॥ हस ८८ दाखां ८९ मा जाडू बेनां चरण संग लियो धार ॥ सार संयम सुख कंदा ॥ द० ॥ २४ ॥ राय ऋषि बारानी भजल्यो ॥ सतियां दोय जगीस ॥ जीत बाराना संत चठारा सतियां युग सांत बीस ॥ मुनि मघराज आद संत चवधा ॥ सतियां सात चालीस ॥ मांगण हद मुनि नव निद्धि सम ॥ सत्यां तास बिमणीस-उ० वारे हजुरी जांण ज्यो ॥ संत ठाणां सतावीस ॥ सत्यां नव असीधर जुमलै ॥ ढाइसो नै अठबीस ॥ बीस सात गुणां धरंदा ॥ द० ॥ २५ ॥ चौमासो प्रथम पच-पन को सहर लाडणुं खास ॥ छप्पनको सर-दार सहर ॥ सत्तावन को बीदास ॥ अठाव नो राजाणो जारी आप कियो प्रकास ॥

गुण सठ साल जोधपुर ॥ साठे सुजाणगढ सुख वास ॥ उ० इकसठ चूरू फुन लाडणुं वासठ बीजी वार सरदार सहर त्रेसठको ॥ चोसठ बिदासर सुख कार ॥ वार अब म्हांरे मुनिंदा ॥ द० ॥ ॥ २६ ॥ चोसठ माघ सुदी बुधवारी ॥ चोथ लाडणुं न्हाल ॥ बेद उदैचंद जोड बणाइ ॥ संत सत्यां गुणमाल ॥ मैं तो म्हांरी जाण मैं सकांइ ॥ अनुक्रमें कही ढाल ॥ आघो पाछो नाम हुवै तो ॥ क्रपा करो दयाल ॥ उ० चोमासैकी अर्ज है ॥ पूरो मनरा कोड राजा यों का भाया पुज्यसैं अर्ज करे कर जोड ॥ मोड सिरनमण करंदा० ॥ द० ॥ २७ ॥ इति०

अथ श्रीडालचंदजी महाराजकी गुणां की ढाल० रागथियेटर की०

हाय सितम गजब हुआ सापुंने मुजको डस लिया ॥ इहांसैं खाये इहांसैं खाये इहांसैं

मुजकों तोड लिया। नीलावदन मेरा हो गया। साधु का जहर चढ़ गया। हाय० एदेशी॥ स्वांम चर्ण सर्ण तरण॥ कर्ण भव पार है॥ एआंकडी॥ भिक्षु पाट सप्तम थाट॥ गहगाट गुंण माट॥ मिथ्या छोत खोत धोत॥ पोत हंस धार है॥ स्वां०॥ १॥ गुंण छतीस बुध बतीस॥ तजी रीस विश्वा वीस॥ ज्ञांन खांन मीठीवांन॥ जिम चीरोद-वार है॥ स्वां०॥ २॥ अहो तुज सांति दांति चांति क्रांति कीर ज्यु॥ देखत पेखत परमानंद॥ भविक मन मभार है॥ स्वां०॥ ३॥ अघ हटार कर्मविडार॥ संगत सार तात सम॥ सोहनी सूरत मोहनी मूरत॥ इछा पूरत मंदार हैं॥ स्वां॥ ४॥ गरीब निवाज ताज आज॥ साज काज दुःख भाज॥ दीनदयाल तुंही कृपाल॥ अरज निहाल सार हें॥ स्वां०॥ ५॥ शिव

वधु बरवा भवदधि तरवा ॥ करवा तन कल्याणको ॥ टुक महर करो भव फेराहरो ॥ तुम चरण सरण जगतार हैं ॥ स्वां० ६ ॥ दीना नाथ साथ आथं ॥ वार२ जोडी हाथ पल २ वंदुं पाप निकंदुं ॥ भेटत तुमदी दार हैं ॥ ७ ॥ स्वांम० ॥ इति दुलीचंदजी साम सुखा क्रत पूज्य गुण वर्णनं समाप्तं ॥

अथ ढाल लीख्यते देसी कुसन गुजरी का ख्याल की: दान देजा गुजर चंद्रावली मोय दान देजा गुजर चंद्रावली: दान हमारो देजा गुज़री जब जाणे दुं आगे व्रज भोम चौरासी बन मे दान हमारो लागे: दान देजा इण चाल मांही छे०

डालु गणी फुली है गण फुलवारी: गणी तोरी फुली है गण फुलवारी ॥ एआ० श्री भिक्षुके सप्तम पाटे ॥ डालम गणी बन-माली ॥ अहो स्वामी श्री भिक्षुके सप्त-

म घाटे डालम गणी बन माली ॥ नंदन बन समएह गण नीको सदा रहो खुश-याली ॥ गणी ॥ १ ॥ संत झुंड सुर तरुसा सांचा । श्रावक तरु श्री कारी २ ॥ चिन्ता वेल असगि है चावि । श्राविका कैसर क्यारी ॥ गणी ॥ २ ॥ द्रढ बीर मुख करुणा बारि । सींचत सम कित मूल २ ॥ सीमा ओट कोट करणीको । तप संजम है फूल ॥ गणि० ॥ ३ ॥ सिद्धा सूर करत छतीसखरी । कापे कुबद्ध वण पूर २ ॥ ज्ञान गीलोल गोफणीगेरी । करता बाहर क्रूर लंगूर ॥ गणि० ॥ ४ ॥ सुयश सुगंध छायो तिहुं लोकि रहे इंद्रादि लोभाइ ॥ अली मन डालु पंकज सेवी । ल्यो फल शिव सुखदाइ ॥ गणि० ॥ ५ ॥ गोर करि ने अरजी सुणियो जेपुर सहर पधारी ॥ चातग मोर ज्यूं घन जोवे तो चावे नर

मारी ॥ गणि०॥६॥ भेद रितु गृह सशि अरु अदवे सित तपा सप्तमी सारी ॥ सुजाण मल सुरी गुण गायां । लाडणु सहर मंझारी गणि० ॥ ७ ॥ इति०

अथ श्री भिक्षणजी स्वामी के गुणांकी ढाल ॥ श्रावक सोभजी कृत० श्री जिन भाषी सरधाराखी ॥अरि हंत ज्युं आचारो रे ॥ मिथ्यात कूपीयो मोटा मुनिश्वर मेट दियो अंधकारोरे ॥ कोइ धारोरे २ श्री पुज्य शिको शिर धारोरे ॥ १ ॥ ज्युं कोइ सूरो रण मे जुझे ॥ ज्युं अजियां बिच न्हारोरे ॥ ज्युं जिन मतमें पुज्य भिक्षण जी ॥ पाखंड पोलण हारोरे ॥ कोइ० ॥ २ ॥ घाट घणो पिण शिको पद्यां बिन । कुण झेले हाथ मझारोरे ॥ ज्युं समकित शिको पुज्य दियो जब ॥ चाल्या तीर्थ च्यारोरे ॥ कोइ० ॥ ३ ॥ ज्युं काष्ट की ज्यांझ

चलावै ॥ समुंद्र मांखे फारोरे ॥ शोभ
कहै थानै भवसागर थी ॥ श्रीपुज्य उतारै
पारोरे ॥ कोई० ॥४॥ पाषंड फूटीज्यास्यं सरीखां
लेडूवैला लारोरे ॥ असल साध भिखणजी
स्वामी ॥ निराधार आधारोरे ॥ कोई० ॥५॥
श्रीपुज्य भिखणजीरी सरधा सुणियां ॥ पडे
पाषंड मुवारोरे ॥ चेला चेली खोया कुमत्यां
करकरकनिया कारोरे ॥ कोइ० ॥६॥ साध
गुणां विन युंहिज लूंटै ॥ ज्यै परतख्य पाडै
धाडोरे ॥ श्रीपुज्यजी चौडे वतावै ॥ अवतो
आंख उघाडोरे ॥ कोई० ॥ ७ ॥ तीर्थंथा-
पीने धर्म चलायो ॥ जाणै वीरनो वारोरे ॥
चौथे आरे वीर प्रगटिया ॥ श्रीपुज्य पंचम
आरोरे ॥ कोइ० ॥८॥ ज्योपर भवमै सुख
चाहोतो ॥ मानों शोभतणो मनुहारोरे ॥
नहीं मानों तो जोरीदावै ॥ देव पीठ परि-
हारोरे ॥ कोइ० ॥ ९ ॥

शोभ वचन थी वेमुख हुवोतो ॥ सूत्र अर्थ संभारोरे ॥ इण दृष्टान्ते दुरलभ लाधौ॥ ते नर भवकांइ हारोरे ॥ कोइ० ॥ १० ॥ एक दमडीरी हंडिया लेवैतो ॥ करै प्रिक्षा च्यारोरे ॥ पिण सत्तगुरुनें पाषंड मत्तरो ॥ पाप्यां काढो नहिं निस्तारोरे ॥ को० ॥११॥ पतिमूवां पछे विधवा हुवै ॥ तेसखै व्रथा सिणगारोरे ॥ ज्यूंमुढपणैमें मग्न भयापिण ॥ नहीं संत सिर धारोरे ॥ कोइ० ॥१२॥ डाकण थइनै कपड़ा नाखै ॥ वलि-हुवै जरख असवारोरे ॥ ज्यु ग्रहस्थनै पाषंडी मिलिया ॥ तेकिम उतरै भवपारोरे ॥ कोइ० ॥ १३ ॥ शोभ कहै में एह सरीखा गुरु ॥ पाम्यांलाख हजारोरे ॥ श्रीपुज्य बिना भव-भवमे पचियो ॥ ज्यु भडभुंजानी भाडोरे ॥ कोइ० ॥१४॥ पाषंड मतमें काल करै तो ॥ जावै नर्क मंझारोरे ॥ परमांधामी देव नर्कमें ॥

देमुद्गरनीमारोरे ॥ कोइ० ॥१५॥ कुणराजाने
कुणग्रहपती ॥ चाल्या जन्म बिगाडोरे ॥
काल लपेटा लेय रह्यो छै ॥ अब तो
आंख उघाडोरे ॥ कोइ० ॥१६॥ हुंडानामें
काल अवसरपणी ॥ महा दुःखमी आरोरे ॥
असल साध ये कठिन कह्यापिण ॥ पमोटा
अणगारोरे ॥ कोइ० ॥ १७ ॥ पुज्य पिटारो
छेगुण भरियो । ज्युं मोतियनको हारोरे ॥
शोभ कहै श्रीपुज्य बुद्धिको ॥ नहीं खूटै
भंडारोरे ॥ कोइ० ॥ १८ ॥ शांशण नायक
श्रीपुज्य जी ॥ अरिहंतज्युं इण आरोरे ॥
शोभ कहै श्रीपूज्य सरीखो नहीं कोई
भर्थसंभारोरे ॥ कोई० ॥ १९ ॥ इति०

अथ ढाल स्वार्थं सिद्ध की बरणनकी ॥

इग्यारैसे जोजनरी महलायत । तेरतना
सेती जडियाजी ॥ साध पणो सुध जे नर
पाले । त्यांरै पाने पडिया जी ॥ इण स्वार्थ

सिद्दरे चंद्र वै कांइ। मोती झुंबक शोहै
जी ॥ १ ॥ तसु झुंबकरै बिचलो मोति॥
चोसठ मणारो जाणों जी॥ च्यारूं मोती
तास पाखतीयां। बतीस २ मणारा बखाणो
जी ॥ इण० ॥२॥ तेहनै पाखतीयां अति
निर्मल। सोलै २ मणारा अठ मोती जी॥
सुंदरता देखी हियोहर्षें॥ आंखड्ल्यां रहै
जोतीजी ॥ इण० ॥३॥ तसुपाखतीयां सोलै
मोती॥ त्यामै आठ २ मणारा भारिजी सोभा
अधिक बिराजै तेहनी॥ दीठां हर्ष अपारीजी॥
इण० ॥४॥ बतीस मोती तास पाखतीयां च्यार
२मणारा तोलोजी॥ जोवंता टप्त नहो हुवै॥
मोती घणा अमोलो जी॥ इण० ॥५॥ तास
पाखतीयां चोसठ मोती॥ ते दोय २ मणारा
तासो जी॥ तेज उद्योत करै तिणठामै॥
त्याछै घणो प्रकासो जी॥ इण० ॥ ६ ॥ त्यां
पासै मोती मण मणारा॥ एक सोनै अठाइसो

जी ॥ भूख तृखा मिटै तस देख्यां ॥ भाष
गया जगदीशोजी ॥ दूण० ॥ ७ ॥ दोयसोनै
तेपन मोती ॥ स्वार्थं शिखरे गिणियां जी ॥
त्रिसला नंदन वीर जनेस्वर कैवल ग्यानी
थुंणीयांजी ॥ दूण० ॥ ८ ॥ वायु जोगे मोती
आफलतो ॥ तोहू मोती मूल न फुटैजी ॥
मीठा सब्द गहर गंभीरा । त्यां मोत्यां मै सुं
उठे जी ॥ दूण० ॥९॥ ते सदा काल शास्व-
ता मोती ॥ त्यां नै पवन चलावैजी ॥ मधुरा
सब्द त्यां मै सुं निसरें ॥ ते सुर नै घणा
सुहावैजी ॥ दूण० ॥ १० ॥ जाणै बतीस
विधि नाटक पडै छै ॥ विविध वाज्यंतर सोहै
जी ॥ छतीस रागणी त्यां मां सुं नीकलै ॥
ते सुरना मनडा मोहै जी दूण० ॥ ११ ॥
वूर वनस्पति नै फैल रूडरो ॥ एसी ओपमां
न्हालीजी ॥ माखण नै रेसम ना लच्छा ॥
तिण स्युं सेज घणी सुंहाली जी ॥ दूण० ॥

१२ ॥ तेतीस हजार बर्ष नीकलियां ॥ भूख तृखा मनस्या थावैजी ॥ सास उसास थी नीचोमूके ॥ पक्ष तेतीसि जावैजी ॥ दूण ॥ १३ ॥ अवधि ग्यान सुं नीचो देखै ॥ नर्क सप्तमी हेठै जी ॥ ऊंचो देखै ध्वजा पताका ॥ तिर्छौं ठेटो ठेट जी ॥ दूण० ॥ १४ ॥ सवार्थ शिद्धना सुख भोगवतां ॥ हर्षै बिसवा बीसो जी ॥ त्यां एक धारा लेह लीन रह्याछै ॥ सुर सागर तेतीशो जी ॥ दूण० ॥ १५ ॥ तिण ठामै जे जाय ऊपना ॥ तेसगला एका अवतारो जी ॥ ते देव चवीने मनुष्य जहुवे ॥ मोटा कुल मंझारो जी ॥ दूण० ॥ ॥ १६ ॥ साध पणो सुध चोखो पाले ॥ तेदू सडी महलायत पावै जी ॥ थोडा दिन मैं करणी करनै ॥ चवनै मुक्त सिधावै जी ॥ दूण० ॥ १७ ॥ इति०

॥ स्वामीजी श्री सत्तमलजी कृत ॥

अथ श्रीडालचंदजी म्हाराज के गुणां की ढाल ॥

पहलीराग० ॥ अपत्सरा करती आरती जिन आगे। हांरे जिन आगरे प्रभु आगे एदेशी० डाल गणि नित सेविये सुखकारी। हांरे सुख कारी रे सुखकारी। हारे थांरी मुद्रा मोहन गारी। हांरे थांरी चरण कमल बलिहारी। डालगणि नित सेविये सुखकारी ॥ ए आं० भिचु पाटे सप्तमें यश धारी। हां रे यश धारीरे यश धारी। हांरे एहतो साहस जिन अवतारी। हां रे थांरी जगमें कीरत भारी शोभ रह्या चिहुं तीर्थमें सुखकारी ॥ हां रे सुख० ॥ २ ॥ नयर उजेणी दीपती कान के नंदा। हांरे कान के नंदा रे गणि नंदा ॥ हांरे थारो आनंद पूनम चंदा। हांरे थाने सेवे सुरनर वृंदा ॥ परतच्छ देवतरु समां सुखकारी ॥ हांरे सुख० ॥ २ ॥ नवकी

जन्म गणिराजनो। तेवीसै संयम धारी। हांरे संयम धारीरे प्रवज्या धारी॥ हांरे हुवा पंडितां में सुविचारी। हांरे एहतो चौपन पट अधिकारी॥ सयल जन कर रच्या चमां चमां सुखकारी॥ हांरे सुख०॥ ॥३॥ गुणषट् त्रसिओपता। असठ संपदा सोहै। हांरे संपदा सोहैरे संपदा सोहै। हांरे अविपेखित हरषित होवै॥ हांरेगणि चंद्र चकोरज्युं जोवै। सोहत षोड़स ओपमा सुखकारी॥ हांरे सुख० ॥४॥ सारकतारक आपछोगणिधीरा। हांरेगणिधीरारेगणिधीरा० हांरे तुमसिंधूजेमगंभीरा॥ हांरे मैंतो पाया अमोलकहीरा॥ गंधहस्तिज्युं पुरषोतमांसुख कारी॥ हांरेसुख० ॥४॥ दयालगवाल कृपाल छोगणिमेरा। हांरे गणि मेरारेगणिमेरा० हांरे मैंतो सरणलिया प्रभुतेरा॥ हांरेमुज मेटो भवभवफेरा। तुमसम नहीको भर्थमां

सुखकारी ॥ हांरेसुख० ॥६॥ संम्वतउगणीसै चोसठो सरीकारो । हांरेसरीकारोरे सुहा-प्यारो ॥ हांरे द्वितिया कृष्ण सोमवारो । हांरे सत्तामल हर्ष अपारो । गुणगावत महामहो-त्सवमां सुखकारो ॥ हांरेसुख० ॥७॥ इति०

अथ ढाल२ दुजी राग० माताजी सभ० दर्शन०एदेशी०हांजीगणी भिक्षुगणीके पाटकै सप्तम सोहताहो स्वाम ॥ हांजी गणी पेखत तुम दीदारकै भवि मन मोहता हो स्वाम ॥ हांजो भवि जपो पूज आनन्द मुंनिंद मनो-हरु हो स्वांम ॥ १ ॥ हांजी गणि सदन वदन छवि छाजतराजत चंद्रमुखी होस्वांम ॥ हांजीगणि तुम तारण मुनि नाथकै सासण गण अखी हो स्वांम ॥ २ ॥ हांजीगणि गुण षट् वींस उदारकै ओपम षट् दस ऊपती हो स्वांम ॥ हांजी गणी वसु संपद वपुधारकै भक्त उद्धारण नित प्रतो हो स्वांम ॥ ३ ॥

ह्वांजी गणी बांणी अति सुखकारके सरस अमृत सहि हो स्वांम ।। ह्वांजी गणि श्रवण सुणत अति प्यारके बहु सुख पावही हो स्वाम ॥ ४ ॥ ह्वांजीगणि सुम गुण अपरम पारके स्वयंभु रमण जेहवाहो श्वांम ।। ह्वांजी गणि किम कहिय लघु बुद्धके अधिक गुण गेहवाहो श्वांम ॥ ५ ॥ ह्वांजीगणि वेद ऋतु ग्रह चंद्र मोह सुक्ता त्रयोदशी हो स्वांम ॥ ह्वांजी गणि सक्षमल गुण गायके तन मन हियो हुलसी हो श्वांम ।। ६ ॥ इति० ।

अथ ढाल ३ तीसरी राग० घुम घुमालो गाघरो म्हांरो एडीलुलर जावैहो लाल एदेशी ॥ पंचम आरे भर्थ मंझारे प्रगट्या भिक्षु अवतारी होलाल ॥ न्याय मार्ग सुद्ध बताविभवि भजन किध निसतारी होलाल । हो जसधारी स्वांमजी । थांरी महिमें महिमां भारी हो लाल ।। हो सुखकारि श्वांमजी । थे तो

तसप्तमपट अति सुन्दर । साहसमांनुजेम पुरंदर । छिवछाजतुहै गणवास्तलकरना । लगरह्यो जियरोहमारो गणिचरणो ॥ वसरह्यो जीयरोहमारो गणिचरणा० ॥ १ ॥ सरद ससांक वदनछिवसोहै । भविजन चन्दचकोर नुं जोवै । वारीजावुं जीसुरतियां है मनह- रनां ॥ ल० ॥ २ ॥ पांप अखंडन सांसय मंडन ॥ मिथ्याध्वांत हरणजुं मारतंडन ॥ तोरेदिदार निरखेसें शिवपदवरना ॥ ल० ॥३॥ वेताषट् मतविवधयीनाणो रसभाषानां सम- यसुजाणी । तोरावाक्य श्रवणते मिटतभव फिरना ॥ ल० ॥४॥ संवत उगणीसे पेंसठ मासे । तपाश्वेत मुनि आंणहुलासे । सत्त- मल तोरा लिया है सरणा ॥ ल० ॥५॥ इति०

अथ ढालः ७ सातमीं राग० कहगय। नांहि सुणग्या मनकी बात कोई म्हेलांको सेवासी० एदेसी० पंचम अर्के प्रगटे भीछु

स्वांम । कोई तसुपट सप्तमे राजैजी विराजै पूज परम गुरू । देसमालवो नगर उजैणी तांम ॥ कोई कनईया लालकी नंदोहो । मुख चंद्राजेम पुरंदरु ॥१॥ मात जडावां जनम्यो सुत सुखकार । कोई सज्जन मन विकसावे जी । यशछायोजेमजिनंदनो ॥ कोई भवि-जन पेखत गणि तुम दीदार ॥ तनु लोम २ हुलसावैजी । वरध्यावै ध्यान गणिंदनो ॥२॥ हरीयरजिमअति गूंजैडालगणींद । कोई तब कीरत अतिभारीजी । विस्तारी चिहुं तीर्थमे मिथ्यातिन्न विध्वंसण जेमदिनंद । भानूं समक्रांतीथारीजी । जगजहारीईह भर्थमे ॥ ३ ॥ वाग्रत वांणीगणी अमीय समान । कोई जिम वर्षे सैंहश्रान्नजी तिमगणीआखैवाण अपु र्वहो । वंछित् पूर्ण हरीचंद्र समजाण ॥ कोई मेरुतणी पर धीराहो । गंभीरा स्वयंभु रम-णहो ॥ ४ ॥ मधुकर मन चाहत मकरांद ।

कोई गोप्यांकि नंदलालोजी तिमगणी वालो सुज नेंकै सही। अहो निस ध्यावत कांनन। गयंद कोई सियाकि रघुरायोजी॥ तिम-गणी मंन भायो दास तुज सर्णहो ॥ ५ ॥ एक रसना करीकिम कहिवाय। कोई अमर पती ज्यो आवेजी गुण गावै सहस्र जिह्वा करी। गुणतो अगणित पारन लंघाय। कोई एहवाकै सुज स्वांमीहो॥ महो नांमीश्रेष्ठ गुणांवरी ॥ ६ ॥ ईंद्री रस निधि चंद्रोवदय मांय। कोई प्रथम कृष्ण जेठमासेजी॥ थई हुलासे गणि गुणगावीया। कोई सत्तमलगणि स्तवन सुणाय। गणि वरना गुण गायाजी। सुखपाया भविमन भावीया ॥ ७ ॥ इति०

॥ स्वांमीजी श्रीकनीरामजी कृत ॥

श्रीडालगणि गुणांकी ढाल० राग० खेलण द्यो गणगोर भंवर मांनेनिर खण दोगण गोरजो म्हारिसहियां जोवेवाट भंवर म्हां॥ एदेशी

सातमो पाट भिक्षुगणी कीरोजाल कियो उजियार ॥ आण अखंडित सासण मंडित साहस जिन अवतार ॥ साहस जिन अवतार गणाधिप साहस जिन अवतार ॥ जीथांरि महिमा अगम अपार ॥ गणाधिप सांभलतां सुखकार ॥१॥ नयर उजैणी मनोहर बाफ कान कुखे अवतार ॥ मात जंडावां रे कुख उपना बरत्या जयरकार । बरत्या जयरकार गणाधीप बरत्या जयर कार ॥ जीथांरो महिमा ॥२॥ नवको जन्म प्रभु तुम पाया ॥ तेवीसे चर्ण-धार ॥ चोपन गणपद पाट विराज्या ॥ चहुं तीरथ हितकार ॥ चहुं तिरथ हितकार गणां धिप चहुं तीरथ हितकार ॥ जीथांरी महिमा ॥ ३ ॥ पाट विराज्या सिंह जिम गाज्या देसना अमृतधार ॥ भविजन सुणरनै अति हर्षे पेखत पुज्य दिदार ॥ पेखत पुज्य दिदार गणांधिप पेखत पुज्य दिदार ॥ जी थांरि॥४॥

षोडस श्रोपम श्रोपत सखरि षट् तीस गुणकी धार ॥ अष्ट संपदा सोहत सुंदर सोम मुद्रा श्रीकार ॥ सोम मुद्रा श्रीकार गणांधिप सोम मुद्रा श्रीकार ॥ जीथांरी०॥५॥ अन्तरजामी तुम गुन सिन्धु वंछित फलदातार महेर करिनै चर्णांराखो उतारो भवपार। उतारो भवपार गणांधिप उतारो भवपार ॥ जीथारी ॥ ६ ॥ उगणीसै पैंसठ माहा वदि दूज चन्देरी सहर मंझार पाटमहोछवनी छव अतिभारि हर्षंत भवि नरनार ॥ हर्षंतभवी नरनार गणांधिप हर्षंत भवि नरनार ॥ जीथांरि ॥७॥ इति०

॥ महा सतियां श्रीचांदकंवरजी कृत ॥

अथश्री डालचंदजी मांहाराजके गुणांकी ढाल पहली राग० सोनारो घड़लो रूपारी इंढांणी ॥ लालजी० गूजर पाणीडै जाय ॥ लालजी०एदेशी०भिचुपट अप्रम छाजताजी। स्वामजी० डालचंद महाराजर। स्वा० भव

दधि तारण जहाज ॥ स्वा० ॥ दुलहापर अवर न भाज ॥ स्वा० ॥ पूज प्रमेसर थांने घणी खमा ॥ १ ॥ नगर उजेणी सखर सुरंगी ॥ स्वा० कान्ह कुले उतपन ॥ स्वा० मात जड़ावां धन ॥ स्वा० ॥ जेहनोहै पुत्र रत्न ॥ स्वा० घणांरे उजागर थांनै घणी खमां ॥ २ ॥ गुण षट् टसनै षट् दस ओपम ॥ स्वा० ॥ संपद अष्ट सनूर ॥ स्वा० ॥ सुर गिर जेम सधीर ॥ स्वा० ॥ निरमल गंगानीर ॥ स्वा० तेज दिवाकर थांनै घणी खमां ॥ ३ ॥ रसि मंडल बिच तखत बिराज्या ॥ स्वा० सक्र ज्युराजै ताय॥ स्वा० पेख छटा विकसाय ॥ स्वा० मनु मधुकर लोभाय ॥ स्वा० जग यश धारक थांनै घणी खमां ॥४॥ पंचानन प्राक्रम कीधो ॥ स्वा० पाखंड दियारी हटाय ॥ स्वा० पुनवंत भेट्या पाय ॥ स्वा० रह्यो तुज भुज छत्र छांय ॥ स्वा० भगत उधारक थानै

घणी खमां ॥ ५ ॥ सुंदर कोमल मधुर मनो
हर ॥ स्वा० देशना अमृत रूप ॥ स्वा० जे
निसुणै धर चूंप ॥ स्वा० ते न पडै भव कूप
॥ स्वा० ॥ भव सिंधु तारक थांनै घणी खमां
॥६॥ मुज चित तुज चरणा वस्याहो ॥स्वा०॥
षट् पद पुसप सुगन्ध ॥ स्वा० ॥ ज्युं मोरां
घन वुन्द ॥ स्वा० ॥जेम चकोरा चंद ॥ स्वा०
आज भयो आनन्द ॥ स्वा० वंछित सार
कथांनै घणी खमां ॥ ७ ॥ चिंत्यामणी सम
नाम तुमारो ॥ स्वा० कल्पतरू रंजीवार ॥
स्वा० ॥ आप तणो आधार ॥ स्वा० दीज्यो
पार उतार ॥ स्वा० विरद विचारक थांनै
घणी खमां ॥८॥ संतियां मांहे सखर सिरो
मण ॥ स्वा० जेठाजी यशधार ॥ स्वा० घणि
सुभ दृष्टि उदार ॥ स्वा० धन्य जेहनो अव
तार ॥ स्वा० पोस दसमी श्रीकार ॥ स्वा०
पार उतारक थांनै घणीं खमां ॥९॥ इति० ॥

ढाल२ दुसरी राग० आई ए सावन मास सखीरी पवनवाजता सरणणणं ॥ चउं तरफ सुं घटाज उमटी इन्द्र गाजता घनननन ॥ बड़ी रे बुन्द वर्षा रीतु बर्षै बीजली चमकै कननननं ॥ पीउ२ पपइया बोलै भरना भर रह्या भनननन ॥ एदेशी० ॥

पंचमैं अरके प्रगटे भिक्षु मिथ्यातम भ्रम हरणणणं ॥ तिमल अनोपम युगल नाण श्रीजिन आणा शिर धरणणणं ॥ भिक्षु स्वाम तणी हदक्यारी मेरो म्हा सुख करणण णं ॥ आराध्यां भव जलद उद्वरे शिवपुर सुंदर बरणणणं ॥ १ ॥ द्वुतिय पाट गुरु माल गणांधिप ॥ नृप इंदु जय सरणणणं ॥ मघवा गणि मनोहर मुद्रा माणक जनमन हरणणणं ॥ गणि महाराज तणो नित कीजे समण महा सुख करणणणं ॥ हरण जन्म जरा मरण तणा दुःख ॥ शिव ॥ २ ॥

रसपट ज्यूं गङ्गाधिपराजै ॥ पद मन मधुकर जपननंनं ॥ सरद शशांक समो मुख सोहै ॥ उदियाचल जिम तपननंनं ॥ डाल गणाधिपनो नित लीजै ॥ सरण सदा सुख करण गणां ॥ हरण कर्म रीपु करण संपदा ॥ शिव ॥ ३ ॥ मदन जिसी मन मोहनी मुद्रा ॥ धरा खिच जिम धरणाणयं ॥ सभा सुधर्मी सक्रतणी पर कीरत छाई घणागणयं ॥ डाल गणि सरना नित वाजै जग यश डंका अगणागणयं । पेखी रचना समो सरणनी ॥ पाखंड भाजै भरणगणां ॥ आ० शिव० ॥४॥ तेजुंज द्रु ससोतप देखो । कुमति लता गई फननन्नंनं ॥ काम क्रोध मदलोभ हटाये क्षांति इसी कर धरणाणां ॥ पुज्य प्रमेश्वरके नित भेटो चरणांवुज दुःख हरनाणयं ॥ कल्प तरु चिंत्या मन पारल आश ध्यां सुख आन ननंनं ॥ श्री० शिव०।५। सघन पवन वर्षाचितु

बरषै देशन महा सुख करणाणं ॥ सरस्वति कंठे भरण बिराजै ॥ हर्ष लिइ जन मननननं ॥ डाल गणाधिप नोनित शांभल वयन रयन हित करणाणं ॥ अमृत रूपण अधिक अनोपम ॥ उभय वयण सुख सरणाणां ॥ आ० शिव० ॥ ६ ॥ कोड दीवाली तपो स्वामजी ॥ ए अविलाषा मननननं । सतियां मैं जेठांजी सोहै । घणी मरजीअति घननननं। उगणींसै साठै गुणगाया सहर बीदासर सरणाणां ॥ माघ मोच्छोत्सव दिन ए नीको रखो मुनिजर नयननंनं । आ० शिव० ।७॥ इति० ।

अथ ढाल३ तीसरी राग० हम तो गई थी पनियां भरनकूं २॥ मेरा यांहीं रह्यारे ॥ ओढुंपै हारे ओढुंपै ॥ छिकवा यांहीं रह्या ॥ मेरी भोली नंनद मेरी स्याणी नंनद ॥ ढूंढि आय थाई अछ्यां ढूंढि आय थाई ॥ वि-

छवा० एदेशी ॥ जिनवर ज्युं उद्योत करन कूं ॥ जिनवर ज्युं उद्योत करन ॥ मेरा श्वाम छजेरे ॥ गणि डाल छजेरे ॥ गा दीपेहांरे गादीपे ॥ गणपत धजा ज्यूंरे ॥ कीरत छाय रही मगमें धजा ज्युं रे ॥ मेरा गणिनो सुयश मेरा श्वामनो महिमां महकायरई ॥ वावा विकसाय रही ॥ अछा गरणांयरई ॥ मगमें धजा ज्यूंरे ॥१॥ सहंस किरण सम कुमति हरणकुं ॥ सहंस कीरण सम कुमति हरण ॥ मेरा स्वाम तपेरे ॥ गणिराज तपेरे शीतलता ॥ हांरे शीतलता गणपत चन्दा ज्यूरे ॥ सोभा ल्याय रह्या मघमें चंदा ज्युंरे ॥ मेरा गणिनो सुयश ॥ करुणा सिंधुनोपद नित ध्याय रहा ॥ बाबा विकसाय रह्या ॥ अछा गुणगायरया मग में चंदा ज्युंरे ॥ सोभाल्याय रह्या जगमें चन्दा ज्यूंरे ॥ २ ॥ पवर बिधि व्याख्यान

करणाकु २ ॥ छटा जबर बणीरे छबिभारी बणीरे ॥ पेखण कुं हांरे पेखण कुं ॥ गण पत घटा ज्यूंरे ॥ स्वामी गुंज रह्या गणमें घटा ज्यूंरे ॥ गणि बर्षे बचन सुणां हर्षे सुजन ॥ कुमति भूज रह्या ढीला पड्यो धूज रह्या ॥ अछ्या पद पूज रह्या ॥ गण में घटा ज्युंरे ॥ स्वामी गूंज रह्यो गणमें घटा ज्युंरे ॥ ३ ॥ भाव्य कलि स्पर्श भ्रम हरणकुं ः २॥ गणि शक्री इन्तारे मानो चक्री जिसारे ॥ सांसणपे हांरे सांसणपे ॥ गण- पत पिता ज्यूंरे ॥ पृथीपाल रहा गछनेपिता ज्यूंरे ॥ गणि बोलें सुमत खलता खोड कु- मत ॥ मद गाल रह्या बावां फेरा टाल रह्या ॥ अछ्या गुण घाल रह्या ॥ गछनें पिता ज्यूंरे ॥ ४ ॥ इति० ।

॥ राय कुंवरजी म्हा सतियां जी कृत ॥

अथ डालचंदजी म्हाराज के गुणांकी

ढाल ॥ राग० ऊंठ चढ़ीने लग्यो तावड़ो कर छतरीको छांयां मांरा चांद: आपां दोनु मिल चढ़ स्यांजी ॥ मांरा० घणामीजाजी चांदजी वो थांरी सूरत प्यारीजी ॥ मांरा० गुणका सागर चांदजी मांरी ओड़ निभावोजी ॥ एदेशी० ॥

भिक्षु सप्तमे पाट गणाधिप डालगणि यश धारी ॥ मांरा स्वाम०जग हितकारीरे । मारां घणां उजागर स्वामजीरे थांरा दर्शन पाया रे ॥ मांरा गुणका सागर नाथ जीरे ॥ मन हर्ष उमायारे ॥ १ ॥ मात जडावां उदर ऊपन्यां कण कुले अवतारी ॥ मांरा० शया उपगारीरे ॥ मांरा जिन मत मंडन स्वामजीरे थांरी सूरत प्यारीरे ॥ मांरा कुमति विहंडन नाथजीरे थांरो महि यश भारीरे ॥ २ ॥ षट्दश ओपम अष्ट संपदा गुण षट् त्रस उधारी ॥ मांरा०कीरत भारीरे ॥ मांरा

सुमति बधारन स्वामजीरे थांरो जाउं बलि हारीरे ॥ मांरा भविजन तारण नाथजीरे ॥ थांरी छटा सुप्यारीरे ॥ ३ ॥ समव सरण बिच जिन इन्द्रपर छटामनो हर छाजे ॥ मांरा० सिंह सम गाजेरे ॥ मांरा घणो पर-तापी स्वामजीरे ॥ देखी पाखंड लाजेरे ॥ मांरा हो बड़भागी नाथ जीरे थांरा डंका बाजेरे ॥ ४ ॥ चिंत्यामणी सम चिंत्या चूरन आशा पुरण इन्दा मांरा० करण आणं-दारे ॥ मांरा दिलका दाता स्वामजीरे थांरी चाउं सुख सातारे ॥ मांरा हो बड़ भागी नाथजीरे ॥ थांरे चरणां रातारे ॥५॥ इति० ॥

अथ उपदेशकी ढाल ॥ राग० श्रोभलरे सीतापति आयो ॥ एदेशी० श्रोभव रतन चिन्तामण सरखो ॥ बारु बार न मिलसी रे ॥ चेत सकै तो चेत जीवङला ॥ एहवो

जोग न मिलसीरे ॥ ओभव रतन चिन्ता-मण सरिखो ॥ एओं० ॥ १ ॥ च्यारुं गत चौरासी गत मै जिहां तुंरुलतो आयोरे ॥ पुन्न जोगे सुपनांरी संपत ॥ मानवरो भव पायोरे ॥ ओ० ॥ २ ॥ बेली थारे बहोला जीवडला ॥ लहै जिनजी रो नांमोरे ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्म छाडीने ॥ कीज्यो उत्तम कामोरे ॥ ओ० ॥ ३ ॥ ज्युं ब्राह्मणने चिंता मण लाधो ॥ पुन्नतणे संजोगोरे ॥ कांकर साटै रालज दीधो ॥ फेर मिलणरो नहीं जोगोरे ॥ ओ० ॥ ४ ॥ धन साधुजी संयम पाले ॥ सूधे मारग चालेरे ॥ खरो ज नांणों गांठे बांधे ॥ खोटी दिष्ट न घालेरे ॥ ओ० ॥ ५ ॥ एक काल थारो काल गयो हैं एक काल थारो नेडोरे ॥ तिण बिचमें तुं बैठ्यो जीवडला ॥ काल आहेड़ी केडोरे ॥ ओ० ॥६॥ मात पिता ढया सुत बन्धव ॥ बहुतें

ममता जोडेरे ॥ यां सेती जीवरी गरज सरैती ॥ साधुजी घर क्यांनै छोडेरे ॥ ओ० ॥ ॥ ७ ॥ मोह मिथ्यात विषय रस छोडी ॥ सम्बर समायक कीजेरे ॥ गुर उपदेश सदा सुखकारी ॥ सुगुरू नो अम्रत पीजेरे ॥ ओ० ॥८॥ ज्युं अंजली मै नीर समावै ॥ खिण२ उणों थावैरे ॥ घडीर मैं घडियावल बाजै ॥ थारी खिण लाखीणी जावैरे ॥ ओ० ॥ ९ ॥ संयम मारग सुध कर पालो ॥ शिव रमणी फल होवैरे ॥ मिनखरो भव छै मुक्तिरो कारण ॥ अहलो तो मत खोवैरे ॥ ओ० ॥ १० ॥ कायर नर कादा में पड़सी ॥ सूरा पार उतरसीरे ॥ बाहर भीतर समता राखो ॥ जन्म मरण नहीं करसीरे ॥ ओ० ॥ ११ ॥ देव गुरू धर्म दृढ़ करि सेवो ॥ समगत सुध आराधोरे ॥ छव काय जीवांरी जयणां पालो ॥ मुक्त तणा फल साधोरे ॥

ओ० ॥ १२ ॥ गुरू कंचन गुरू हीरा जीव-उला ॥ गुरू ग्यानरा भरियारे ॥ ज्यां गुरू उपदेश हृदयमें धाऱ्यो ॥ अनंत भवे जीव तिरियारे ॥ ओ० ॥ १३ ॥ इति० ।

अथ श्री भव जीवांकी ढाल वैराग की ॥

राग० ॥ पंचो गोरीरो छोड़ोहो रसिया वस पड़े । एदेशी० भव जीवां आद जनेश्वर वीन वु ॥ सत्त गुरू लागुं पाय ॥ भव जीवां मन वचन काया वस करो ॥ छोड़ो च्यार कखाय ॥ भव जीवां कराों हो की ज्योचित निरमली ॥ ए आं० ॥ १ ॥ भव-जीवां मीनख जमारो दोहेलो ॥ सुन सुंण भवसार ॥ भ० साची सरधा दोहेली ॥ उत्तम कुल अवतार ॥ भव० ॥ २ ॥ भ० सिकियो इण संसारमै ॥ भड़भूंजा की भाड़ ॥ भ० निगरंथ गुरु हेला देवै ॥ भव तुं आंख उघाड़ ॥ भ० ॥ ३ ॥ भ० मोह

मिथ्यात री नींद मैं ॥ सूतो काल अनाद ॥ भ० जन्म मरण बहुला किया ॥ ज्ञान विना नही याद ॥ भ० ॥ ४ ॥ भ० नर्क तणां दुःख दोहेला ॥ सुण तां थर हर थाय ॥ भ० पाप कर्म बहुला कीया ॥ मार अनंती खाय ॥ भव० ॥ ५ ॥ भ० चांद सूर्य सुख दीषे नहीं ॥ दीषै घोर अंधार ॥ भ० भाजण नै सेरी नहीं ॥ जिहां भाजै जिहां मार ॥ भव० ॥ ६ ॥ भ० आंधो जीमण रातरो ॥ करतो डरतो नांह ॥ भ० बो भर भाटो तेहनै ॥ चांपै मुखड़ा रै मांह ॥ भव० ॥ ७ ॥ भ० परमां धामीं देवता ॥ ज्यांरी घनरी जात ॥ भ० मार देवै पापी जीवनै ॥ करै अनंती घात ॥ भव० ॥ ८ ॥ भ० अर्थ अनर्थ धन कारणै ॥ जल ढोल्यो विन ज्ञान ॥ भ० बाहेर सुच बहुला किया ॥ भीतर मेल अज्ञान ॥ भव० ॥९॥

भ० वयतरणी नदी लोही राधरी ॥ तिणरो तीखो नीर ॥ भ० तिणमै डबोवै पापी जीवनै ॥ छिंट २ होय शरीर ॥ भव० ॥१०॥
भ० ढांढै ज्युं चरतो रहतो ॥ गिणतो नहीं तिथ न वार ॥ भ० पान फल रूंख छेदतो ॥ दया न आणीं लिगार ॥ भव० ॥ ११ ॥
भ० विषं तिहां पुले छांवलो ॥ बैठतो तिणरी छांय ॥ भ० पान पड़ै तरवार ज्युं ॥ टूक २ हुय ज्याय ॥ भव० ॥ १२ ॥ भ० पराई छाती दाभतो ॥ चोख्या बहोत जमाल ॥ भ० धन तो खाधो कुटम्बीयां ॥ मार एकलडो झाल ॥ भव० ॥ १३ ॥
भ० धंधेमै खूतो रहतो ॥ जूतो घरको बार ॥ भ० लोह तणै रथ जोड़ीयो ॥ धर ताता अंगार ॥ भ० ॥ १४ ॥ भ० हाथ पांव छेदन करै ॥ नाखै अंग मरोड़ ॥ भ० तिण जायगां आय जपनो ॥ नहीछै

किणारो जोर ॥ भव० ॥ १५ ॥ भ० पाप कर्म बहुला किया ॥ कर २ मनरो जोस ॥ भ० बोलै परमां धामीं देवता ॥ किसो हमारो दोस ॥ भ० ॥ १६ ॥ भ० रंग राती माती फिरतो ॥ पर नार्यां रै संग ॥ भ० अग्न बलती लोह पूतली ॥ चाढै तिणरै अंग ॥ भव० ॥१७॥ भ० खिण जीतब सुखरै कारणै ॥ सागर पल्यांरो मार ॥ भ० बिन भुगत्यां छूटै नहीं ॥ अरज करूं बार बार ॥ भव० ॥ १८ ॥ भ० क्रोधमान माया लोभमें ॥ छकियो घोर अथाय ॥ भ० साध श्रावक दोषे नहीं ॥ देतो धर्म अन्तराय ॥ भव० ॥ १९ ॥ भ० जीव हणै धर्म जाणनै ॥ सेव्या कुगुरु कुदेव ॥ भ० निग्रन्थ गुरसेव्या नहीं ॥ राखी कुलकी टेव ॥ भ० ॥ २० ॥ भ० मूये गयैनै भूख्यो घणो ॥ लेयर पाछली रात ॥ भ० ॥

अथ श्री मंद्रजी स्वामीरो सत्वन राग० हुई सुवै नीकस गये तारा मुज छाड चले बनजारा ॥ एदेशी० श्रीमंद्र स्वाम तुमारा। मोय दरसण प्राण अधारा। एआंकडी स्वारथ सिद्धंथकी चव आया ॥ सत्तकी दे कूंचे जाया रे ॥ श्रीयांश नृप सुखकारा ॥ मो० ॥१॥ सुर इन्दर मंगल गावे ॥ सुणभवि-जन मन हरखावेरे ॥ महोत्सवके अंत न पारा ॥ मो० ॥ २ ॥ नारी रुकमणी परणी बहु शील गुणें मन हरणीरे ॥ शशि सूर्य तेज भिलकारा ॥ मो० ३ ॥ संसार सुख जाणि खारा ॥ प्रभु लीधो संयम भारारे ॥ प्रभु गुण कर ज्ञान भंडारा ॥ मो० ॥ ४ ॥ अतिसय च्यार ने तीसो ॥ बाणी भल पैंती-सोरे ॥ जिम घन वर्षे जल धारा ॥ मो० ॥ ५ ॥ स्फटिक सिंहासण छाजे ॥ प्रभु मेघ तणी पर गाजेरे ॥ पाखंडकी पीलन

हारा ॥ मो० ॥ ६ ॥ कंचन वर्णी काया ॥ भल केवल पदवी पायारे ॥ प्रभु च्यार कर्म जड जारा ॥ मो० ॥ ७ ॥ आयु पूरव लाख चोरासी ॥ प्रभु मुक्त पुरी ना वासीरे ॥ श्रीजिन० सांसण सिरदारा ॥ मो० ॥ ८ ॥ तुज सेवै घणां नरनारी ॥ नित प्रति उठ सांज स्वारीरे ॥ भल ध्यान धरे सहु थारा ॥ मो० ॥९॥ संवत् उगणीसे पैंसठ ॥ सावण मास सरे सटरे ॥ चवदस तिथि मंगल-वारा ॥ मो० ॥१०॥ कनीराम गुण गाया ॥ प्रभु सरण तुमारी आयारे ॥ मेरे भव दुःख भंजो सारा ॥ मो० ॥ ११ ॥ इति ।

अथ श्री डालचंदजी म्हाराजके गुणांकी ढाल० राग० ठेठरकी० देशी० तन मन धन कहू तोपे वारीयां ॥ तन मन । एआंकडी डालचंदगण इन्द्र दिमंद सम ॥ चर्ण कमल बलिहारीयां ॥ तन मन ॥ १ ॥ श्रवन वेदन

तन अप्रसन मन घन ॥ निरखन चित दीदारीयां ॥ तन ॥ २ ॥ रहित सक्यो दर-शन विन पायँ ॥ तव इहां आय जुहारीयां ॥ तन ॥ ३ ॥ तत खन कानै आय दरिशन पायो ॥ देख अचरिज अधिक करारीयां ॥ तन ॥ ४ ॥ पूरण महेर करी सुज उपर ॥ टुकीक निजर निहारीयां ॥ तन ॥ ५ ॥ सम चित वेदन सहन मही सम ॥ दिलमें धीरज धारीयां ॥ तन ॥ ६ ॥ मन वलियो वलवंत न दूजो ॥ तुम सम भर्थ संभारीयां ॥ तन ॥ ७ ॥ असुभ दैत्य अघ चूरण कारण ॥ शान्त वज्रकर धारीयां ॥ तन ॥ ८ ॥ थासे सुख साता अब जलदी ॥ चिहुं तीरथ भाग्य सुसारीयां ॥ तन ॥ ९ ॥ गुलाबचंद सुखमें सुख लहिसे ॥ जयपुर सहर पधारीयां ॥ तन ॥ १० ॥ उगणीसै छासठ श्रावण मैं ॥ लाडणूं हर्ष अपारीयां ॥ ११ ॥ इति० ॥

अथ श्री पुज्य परमेश्वरजी श्रीकालुराम जी महाराजके गुणांकी ढाल १ पहली ॥ राग० सरणाटै कुचामण बहग्यो ॥ मांरै मारूजी रो बंगलो रहग्यो जी ॥ सर० वा: बलदेव दुसाले वाला ॥ एदेशी० कालुराम गणिन्द गणधारी ॥ थांरी सूरत लागै प्यारी जी ॥ कालु० थांरी मुद्रा मोहन गारीजी कालु० ऐआं० भिक्षु भारी माल नृपचंदा ॥ जय यश मघ मांणिक मुनिंदा जी । कालु० ॥ १ ॥ सप्तम पट डाल सोभायो ॥ वांसां सण खूब दीपायोजी ॥ कालु० ॥२॥ अष्टम पट कालु छाजै ॥ थांरा महि यश डंका बाजैजी ॥ कालु० ॥ ३ ॥ गणिछापुर सहर मंझारी ॥ लियो ओशवंश अवतारी जी ॥ कालु० ॥४॥ मूलेस कुले अवतंसा ॥ कोठारी गौत सुवंशाजी ॥ कालु० ॥ ५ ॥ शतिमाल छोगांजी थांरी ॥ ते तीसे कुक्ष उजारीजी ।

कालु० ॥ ६ ॥ वय एकादश वर्ष धारी ॥
चारित्र लेवण हुया त्यारीजी ॥ कालु० ७॥
माता सुत एकज साथे ॥ दिक्षा दी मघवा
गणि हाथेजी ॥ कालु० ॥ ८ ॥ वेद वेद
सम्वत शुभकारी ॥ बीदासर सहर मंझारी
जी ॥ कालु० ॥ ९ ॥ मघवा माणक सिख
धारी ॥ तस सेव करी धर प्यारी जी ॥
कालु० ॥ १० ॥ दिन२ गुण वधत सवायो ॥
डालम गणिके मन भायो जी ॥ कालु० ॥
॥ ११ ॥ बहु सास्त्र सीख हुया जाणों ॥
व्याकरण चन्द्रिका पिछाणों जी ॥ कालु०
॥ १२ ॥ छासठ संवत शुभ कारी ॥
थया युग पदना अधिकारी जी ॥ कालु० ॥
१३ ॥ सावन वद एकम नाम लिखायो ॥
कागज पूठे मे रखवायो जी ॥ कालु० ॥
१४ ॥ भाद्रव शुद तेरस शुभ वेला ॥ थया
च्यार तीर्थ सहु भेला जी ॥ कालु० ॥ १५ ॥

जग नाम प्रगट भयो थांरो ॥ सहु जय २ सब्द उचाख्योजी ॥ कालु० ॥ १६ ॥ सुद पूनम बहु रंगरेला ॥ थया पट् महोत्सव ना मेला जी ॥ कालु० ॥ १७ ॥ गणि गुण षट् वीस उदारी ॥ ओपमषोड़स सुविचारी जी ॥ कालु० ॥ १८ ॥ थांरी अष्ट सम्पदा सोहै ॥ पेखत भवि जन मन मोहै जी ॥ ॥ कालु ॥ १९ ॥ जोरावर सर्ण तिहारै ॥ थांरो बधो सुयश महिसारै जी ॥ कालु० ॥ ॥ २० ॥ आशन शुद्द बेद कहाया ॥ थांरा गुण कलकत्तामें गाया जी ॥ कालु० ॥ २१

अथ ढाल २ दुजी० राग जलै मारुके गीतनी देशी० ॥

श्री श्री कालुराम गणिंद गणधारी जी ॥ म्हांरा गण सिणगार ॥ थांरी सूरत मुद्रा पेखत लागे प्यारी जी ॥ म्हाराज० एआं० ॥

पुजजी आप० भिचु गणिंद रे ॥ अष्टम पट अति छाजै जी ॥ म्हां० ॥ थांरी समो सरण विच ॥ देशन सिंह सम गाजे जी ॥ म्हां० श्री श्री ॥ १ ॥ पु० सुत्र सिधंतकि भेद भिनो २ भाषे जी ॥ म्हां० भवि श्रवण सुणीनै प्रेम शुधामृतचाखै जी ॥ म्हां० श्री श्री ॥ २ ॥ पु० देवा री देव ज्युं विचरी भर्थ मंझारे जी ॥ म्हां० थांरो यश लच्छी फैलो देश विदेशमें सारे जी ॥ म्हां० श्री श्री ॥ ३ ॥ पु० धरा उपरे होवो घणा वड़ नामी जी ॥ म्हां० म्हांरा एह मनोरथ लग रह्या अन्तरजामी जी ॥ म्हां० श्री श्री ॥४॥ पुज जी थांरी-सोहनी सूरत वसरही मुज हिय मांयोंजी ॥ म्हां० थांरो भू पर बध ज्यो दिन २ तेज सवायोजी ॥ म्हा० श्री श्री ॥ ५॥ पुजजी थांरा संत शत्या सूं सांसण खिल रह्यो सारोजी ॥ म्हां० थांरी गादी अचल

रहो जब लग ध्रुव तारोजी ॥ म्हा० श्री श्री ॥६॥ पुजजी आप कृपा करके वीनतडी अब धारोजी ॥ म्हां० थांरो आवतको चौमासो मुज सहर मंझारो जी ॥ म्हा० श्री श्री ॥ ७ ॥ चौमासाकी श्रीमुख सुं फरमावो जी ॥ म्हां० थांरो जोरावर है दास आश पूरावो जी ॥ म्हा० श्री श्री ॥ ८ ॥ पुजजी थांरा गुण अगणित है मोमति किम कहायेजी ॥ म्हां० आशन शुद्द एकम प्रेम धरीने गायेजी ॥ म्हां० श्रीश्री ॥ ९ ॥ इति०।

अथ ढाल ३ तीसरी राग सारङ्ग।

मोय नीको लागे सूरत तिहारी ॥ अष्टमें पूजको जाउं बलिहारी ॥ मोय० एआं० भिक्षु गणिन्दके वसु पट राजत ॥ कालुराम गणिंद गणधारी ॥ मोय० ॥ १ ॥ छोगांजी मात मूलसको नन्दन ॥ ओस वंश अवतारी ॥ मोय० ॥ २ ॥ सोहनी सूरत

मोहनी मूरत ॥ सौम्य मुद्रा सुखकारी ॥ मोय० ॥ ३ ॥ तखत वीराजे छटा अति सोहै ॥ दीपत तेज दिनारी ॥ मोय० ॥ ४ ॥ बैठ सभा विच देवो देशना ॥ वाक्य घटा वरसारी ॥ मोय० ॥ ५ ॥ श्रवण सुणत भवि जीव आनंद मन ॥ रोम २ हुलसारी ॥ मोय० ॥ ६ ॥ घन वुंदन कों चातक चाहत ॥ तीय चाहत नरनारी ॥ मोय० ॥ ७ ॥ जोरावर तोसुं अरज करत है ॥ मानो अरज हमारी ॥ मोय० ॥ ८ ॥ शुद ग्यारस गुण गावत तनमन ॥ मृगसर मास संस्कारी ॥ मोय० ॥ ९ ॥ इति० ॥

अथढाल ४ चौथी. राग० माढ ॥ म्हांरे ढोले छाई बीकानेर ॥ एदेशी० म्हांने प्यारा लागे स्वामी कालुराम ॥ म्हानैं वाल्हा लागे स्वामी कालुराम ॥ हांनो थांरो जपन करुं आठोंयाम ॥ म्हा० एआं० पंचमें आरे

देव जिनेन्द्रसा ॥ प्रगटे भर्थमें आन ॥ भिक्षु गणिंदके अष्टम पाटे ॥ जिम उदिया चंद भान ॥ म्हारा राजां आप जिम उदिया चंद भान ॥ म्हा० ॥ १ ॥ शभा सुधर्मी इन्द्रतणी पर पामत शोभ असाम ॥ जिम मुनिगणमें आप तणी छिब ॥ नीकी लागे ताम ॥ आछी छिबनीकी लागे ताम ॥ म्हां० ॥ २ ॥ भवि जन सेवा सारे आपकी ॥ कवड़ी लगै न छदांम ॥ प्रात उठी थांरा दर्शन पावे ॥ ज्यांरा कटज्यावे पाप तमांम ॥ हांजी वांरा कट ज्यावे पाप तमांम ॥ म्हां० ॥ ३ ॥ तुज चरणोंमें रम रह्या ते ॥ नित गावे गुण ग्राम ॥ गावत २ कर्म खपावै ॥ पावे अविचल धाम ॥ हांजी वेतो पावे अविचल धाम ॥ म्हां० ॥ ४ ॥ गोप्यांके मन कान्ह बसत नित ॥ सीताके मन रांम ॥ जिममुज मनमें बसरह्याजी ॥ म्हारो सारो वंछित काम ॥

म्हाराजा म्हांरो सारो वंछित काम ॥ म्हां०
॥ ५ ॥ हाथ जोड़ अरजी करुंजो स्वामी ॥
नमन करुं सिर नांम॥ कृपाकर मुज नग्र-
पधारो ॥ म्हांरो अधिक वधारो मांम ॥ म्हा-
राजा म्हांरो अधिक वधारो मांम ॥ म्हां०
॥ ६ ॥ सडसठ चैत शुक्लपक्ष बारस ॥ काल-
कत्तो शुभठांम ॥ जोरावर प्रभणात यशथांरा
॥ सफल भई सुजहांम ॥ म्हाराजा म्हांरो
सफल भई छै हांम ॥ म्हां० ॥ ७ ॥ इति ॥

अथ ढाल ५ पांचमी० राग० कहरवा ॥
मोय प्यारा जो लगता मोर मुकट वंसी-
हारा ॥ मोय० एदेशी० मोय प्यारी ज्यो
लगती ॥ प्यारी ज्यो लगती मोय प्यारी ज्यों
लगती ॥ स्वाम सांसन फुलवारी ॥ मोय०
एआं० इन बाडीका धर्णा जनेश्वर ॥ श्रीवर्द्ध-
मांन उद्धारी ॥ मोय ॥ १ ॥ भिक्षु भारी
माल रायगणि सींची ॥ जय जश कर्णा

सुधारी ॥ मोय ॥ २ ॥ मघ मुनि मांणक
लाल डाल शशी ॥ दिन२ अधिक उजारी ॥
मो० ॥ ३ ॥ अब इन वाडीके अधिपति
सोहत ॥ कालुराम गणधारी ॥ मोय० ॥४॥
शीतल शरद शशांक वदन छिब ॥ सुद्रा
मोहन गारी ॥ मोय० ॥ ५ ॥ धीर बीर
गम्भीर गणाधिप ॥ तप रह्यो तेज दिनारी ॥
मोय० ॥ ६ ॥ इण वाड़ीमें शुर तरु जैसा ॥
सन्त श्रावक अति भारी ॥ मोय० ॥ ७ ॥
काम लता सम समणी है गहरी ॥ श्राविका
जिम गुल क्यारी ॥ मोय ॥ ८ ॥ समकित
चरण पुहप बहु फूले ॥ फल शिव पद सुख-
कारी ॥ मोय० ॥ ९ ॥ सुयश सुगन्ध फैल्यो
टहुं लोकि ॥ सुण भवि भ्रमर लुभारी ॥
मोय० ॥१०॥ इण सांसणमें क्रीड़ा करन्ता ॥
पामैं आनन्द कारी ॥ मोय० ॥ ११ ॥
जोरावर तोरा गुण गावत ॥ प्रगट्यो हर्ष-

सुपारी ॥ मोय० ॥ १२ ॥ सड़सठ चैत शुक्ल एकम दिन ॥ कलकत्ता शहर मझारी ॥ मोय० ॥ १३ ॥ इति ॥

अथ ढाल ६ छठी गुरू म्हाराज पधारे जब लुगायांके गावनकी ॥ राग० ॥

मेरी सहीयां हे आज म्हांरो लालन आवे लोए ॥ एदेशी० ॥ संत सत्यांनां वृंद सुं ॥ परवरीया गुण धार ॥ वीर जिनदसा दीपता ॥ हिवडां भर्थ संस्कार ॥ म्हांरी सहियां हे आज म्हांरा पूज पधारीया हे ॥ म्हांरो धन्न दिन आयो ॥ म्हांरो पुन्न प्रगटायो ॥ म्हांरो हियो हुलसायो ॥ म्हांरी० ॥ १ ॥ एसा० ॥ आज नगर रलिया मणों ॥ आज भलो दिन वार ॥ आज कृतार्थ सहु थया ॥ पेखत गुरू दिदार ॥ म्हांरी ॥ २ ॥ दर्शन कीधा प्रेमसुं ॥ लुल२ शीस लुलाय ॥ पुज्य कमल पद भेटीया ॥ पातिक

दूर पुलाय ॥ म्हांरो ॥ ३ ॥ बहोत दिनोंकी आश थी ॥ से पूरण थई आज ॥ आनन्द अङ्ग मावै नहीं ॥ सरिया वञ्छित काज ॥ म्हांरो० ॥ ४ ॥ सुखे विराजो स्वामजी ॥ करो घणां उपगार ॥ सिंह निसा गूंजो मही ॥ विनति करां बारूंबार ॥ म्हांरो ॥५॥

॥ इति ॥

अथ ढाल ७ सातमी गुरु म्हाराज विहार करै जब लुगांयांकि गावनकी ॥ राग बागां जाज्यो पिवजी थे निम्बु ल्याज्यो ल्यारजी ॥ एह गीतनी देशी० ॥ भिक्षण जीरा चेला दर्शन वेगा २ दिज्योजी ॥ जीनतड़ी अब थारी म्हां पर किरपा कीज्यो जी ॥ एआं० ॥ आदनाथ आदे भ्रवर ज्युं ॥ भिक्षुइण पंचम आरो जी ॥ मिथ्या तिम्र विडार ॥ भान ज्युं कियो उजारो जी ॥ भि० ॥ १ ॥ मारग सुद्ध चलायो तिणने ॥

दिन २ घणो दिपावोजी ॥ भविजीवां नै तारी ॥ भवसें पार पमावोजी ॥ भि० ॥ २ ॥ बोध बीज आपो बहु जनने ॥ भिन २ रहेस सुणावोजी ॥ खलता खोड़ मिटाय ॥ अभय पद जलदी द्यावोजी ॥ भि० ॥ ३ ॥ सुखे २ विचरो महि ऊपर ॥ करो घणां उपगारो जी ॥ शुभ दृष्टि सुं याद करी ॥ म्हांरी लिज्यो बेग संभारो जी ॥ भि० ॥४॥ श्रावक श्राविका तन मन धन कर ॥ हित चितसें गुण गावै जी ॥ लटक २ लटका करै ॥ थांरी मरजी चावै जी ॥ भि० ॥५॥

॥ इति ॥

अथ श्री१०८ श्रीगणेशलालजी स्वामी नै गुणांकी ढाल० राग० सोरठ ॥ गजानंद ध्याउं ऊठ सवेरे ॥ सैंतो चरन कमल हुं तेरे ॥ गजा० एआं० गांव सवाई माधोपुर है ॥ सुत शिव लाल जी केरे ॥ गजा०

॥ १ ॥ मात वरजु जीहो उद्रवपना ॥ पोरं
वाल वंस लेरे ॥ गजा० ॥ २ ॥ उगणी सै
सत्ताइस वर्षे ॥ उर वैराग्य धरेरे ॥ गजा०
॥ ३ ॥ हीरालालजी स्वाम समीपे ॥ दिक्षा
व्रतं गहेरे ॥ गजा० ॥ ४ ॥ जय मघ मांणक
लाल डाल गणि ॥ सब ही की सेवकरेरे ॥
गजा० ॥ ५ ॥ कालुराम गणाधिपकी अब ॥
शांपर महेर घनेरे ॥ गजा० ॥ ६ ॥ नीत
निरमल शुद्ध संयम पालो ॥ शिर गुरु
आण धरेरे ॥ गजा० ॥ ७ ॥ वास वेला
तेला इत्यादिक ॥ बहु बिध तप्प तपेरे ॥
गजा० ॥ ८ ॥ मुज उपर क्रपा अति कीनो
बहु विध ज्ञान दियेरे ॥ गजा० ॥ ९ ॥ तुम
प्रसाद एह सांसन पायो ॥ दिन २ रंग
बढेरे ॥ गजा० ॥ १० ॥ हाथ जोड़ कर करु
वीनती ॥ रखो सु निजर घणेरे ॥ गजा०
॥ ११ ॥ सड़सठ साल वैसाख क्रष्ण पक्ष ॥

अष्टमी तिथ रूडेरे ॥ गजा० ॥ १२ ॥ जोरा वर तोरा गुण गावै ॥ कलकत्ता सहर संभेरे ॥ गजा० ॥ १३ ॥ इति० ॥

ढाल राग भटीयांणीकी देशी । बसु पट पेथट छाजे हो ॥ बीराजे बीरजिन्द ज्यु ॥ हो दु:ख पञ्चमे आर ॥ गणीवर दीनदयालु हो ॥ कृपालु कालु स्वामजी ॥ हो जनक जेम आधार ॥ खमां घणी गण इन्दु हो ॥ गुण सींधुराज खमां घणी ॥ एंआं ॥ १ ॥ सुमत गुप्त ब्रत पालक हो कांई धारक दस विध धर्म्मना ॥ हो बारक च्यार कषाय ॥ जिन धर्म्म जोत जगावा हो ॥ सुरी दीपक साचो सुन्दरु ॥ दिधो सासण कलस चढ़ाय ॥ खमा० ॥ २ ॥ अति सैय तेज दिनन्दा हो ॥ जिन हदा पंकज नीपरे ॥ हो निरख २ हरषाय ॥ गुघु सम दु:ख पावे हो ॥ मुरझावे पाषंड पापिया ॥ हो

तसकर जेम लुकाय ॥ खमा० ॥ ३ ॥ सकर सभावत सोहै हो ॥ मन मोहै सुरपति साहेबो ॥ हो देव ज्युं मुनी सेवंत ॥ ग्यान घटा दरसावे हो ॥ झड़ ल्यावे उप सम नीर थी ॥ हो क्यारी गण सींचंत ॥ खमा ॥ ॥ ४ ॥ काव्यकोस नयै युगती हो ॥ वरगद पद छंद स्वरे करी ॥ हो भाषित भिन २ भेद ॥ स्वय अनुमति प्रती बुजे हो ॥ तसु सुजे शिव मग सांभलो ॥ हो ज्युं ब्रह्मा मुख बेद ॥ खमा० ॥ ५ ॥ पर उपगारी भारी हो ॥ सोदागर हित सिख आपनै ॥ हो सांती सुधा रस पाय ॥ सिंधु सलवत बारु हो ॥ जस चारु महियल विसतरयो ॥ महि रसना केम कहाय ॥ खमा ॥ ६ ॥ भव अरणव ए तरणव हो ॥ तव नरणव सफरी न्याव ज्युं ॥ हो वरणव शिव पुर राज ॥ जग वछल जस धामी हो सिरनामी स्वामी

मैं करूं ॥ हो अरज सुणो सिरताज ॥ खमा ॥ ७ ॥ कह कर जोड़ि मोड़ी हो ॥ मन किंकर यां कदमां तणों ॥ प्रभु दीज्यो लाज निभाय ॥ उभय भवे सुख पाऊं हो सुभ दृष्टि चांहुं नाथरी ॥ हो मांगूं गोद बिछाय ॥ खमा ॥ ८ ॥ आज भलो रवि आयोहो ॥ मै दर्शण पायो देवरों ॥ हो जन्म कृतार्थ थाय ॥ ऋषि जयचन्द प्रकासे हो ॥ रितु राग अनद बिद छग सरे ॥ हो चतुरदसी चित चाय ॥ खमा ॥ ९ ॥

इति० ॥

ढाल लिखते० वीर जिनेश्वर शुणज्योमोरी वीनती एदेशी ॥ म्हारेहर्ष वधावो छापुर सैहरमां ॥ कोई घर घर मङ्गलाचार ॥ उमङ्गो समुद्र श्रावण भाद्रवे ॥ कोई हर्ष रया नर नार ॥ म्हारे ॥ एआं ॥ १ ॥ मूलचंद कुलमें सूरज ऊगीयो । कोइ मेटणतीम्र अंधार ॥ मात छोगां जी मन हर्षो घणो ॥ कोइ निरखी सुत दीदार ॥ म्हारे ॥ २ ॥ सात कोठारी कुलमें दीपता ॥ कोई चन्दन सुरभी दूध ॥

पुर्ष बतीसां लक्षण आगला ॥ कोई गुणछट्तीसुं शुध ॥ म्हारे ॥ ३ ॥ नांव कालुजी अधीको ओप्तो ॥ कोई स्याम वर्ण सुख कंद ॥ धर्म्म उपदेश देई भविस्यारता ॥ कोई संप्रति नेमजिनंन्द ॥ म्हारे ॥ ४ ॥ सुत्र सिद्धांत ख्यांत करी बांचता ॥ कोई भिन भिन भेद बखाण ॥ दान दयानें सुनि पतछाणन ॥ ॥ कोई तारे जीव अयाण ॥ म्हारे ॥ ५ ॥ बाक्य छटा घटा झड़ ओसरें ॥ कोई जलधारा असमान तिम सुण २ सारङ्ग जन जिवडा ॥ कोई छपाने अम्रत पान ॥ म्हारे ॥ ६ ॥ च्यार तिर्थ मैंगणपत ओपता ॥ कोई जिमतारों विच चंद ॥ मुखडो मलियागर शीतल सोहंतो ॥ कोई अंतर तमनिकंद ॥ म्हारे ॥ ७ ॥ चिंत्या चूर्ण चिन्तामण सारखा ॥ कोई कल्पतरू दातार ॥ वंछीत पूरण भूरण पाप नें ॥ कोई सब जीवां आधार ॥ म्हारे ॥ ८ ॥ कनक बर्ण तन सुन्दरता घणी ॥ कोई मुंद्रता पंडूर ॥ छाई चमाई जग. जशवेलडी ॥ कोई बध रयो पुन्य अंकूर ॥ म्हारे ॥ ९ ॥ घाट बीषम वट बच्चोअड रयो ॥ कोइ कर द्यो खेवो पार ॥ सरणे आयांरीं लज्या राखज्यो ॥ कोई थारोही आधार ॥ म्हारे ॥ १० ॥ सम्वत १९६६ पौष मैं ॥ कोइ कृष्ण टतीय बुधवार ॥ अर्ज हजारी करजोड़ी कहै ॥ कोई कलकत्ता सहर मंजार ॥ म्हारे ११ ॥ इति० ॥

सूचीपत्र वा आगेसें सुभीता।

श्रीरूपसैन कुमारनो चरित्र पक्का जिल्द सहीत कीमत १।) डाक महसूल अलग।

श्रीजैन भजन प्रकास प्रथम भाग कीमत ॥/) डाक महसूल /)

श्रीजैन भजन प्रकास द्वितीय वा तृतीय भागका कीमत आगे ॥/) आना छा तका अबसुं कीमत ।=) आना डाक महसूल /) आना।

श्रीसालभद्रजी सेठनो शलोको वा श्री नेमीनाथजी भगवाननो नव रसो अगाडी कीमतः।) आना छा अबसुं =) आना रखा है डाक महसूल अलग।

सुभम भवतु०

प्रस्तावना ।

इस किताबमें श्रीतीर्थंकर भगवान वा बीस विहर मणा वा श्री १००८ श्री स्वामी भिक्षणजी वा मांणकलालजी वा डालचन्द जी वा नये गद्दीधर महाराज धिराज श्री कालुरामजी महाराजके गुणांका सत्वन वा उपदेसकी ढालां श्रोर भी मोकली संग्रह करके सर्व जैनी भाइयोंकि बांचना हितार्थ बनाय कर छपाव्या छै इस किताबकों जयणां पूर्वक भणने गुणने में ल्यावे श्रोर अपनो लाभ उठावें ।

मिलनेका ठिकाना ।

भैरुदान जोरावरमल बैयद

मु० रतनगढ़ ।

नं० १४ मुंगापट्टी बड़ाबजार कलकत्ता ।